

ग्रीस सेना प्रमुख आ रहे भारत, अब धिरेंगे एर्दोगान!

एथेंस (एजेंसी)। भारत का रक्षा एक्सपोर्ट लगातार बढ़ रहा है। भारत की ब्रह्मोस सुपरसोनिक



कूज मिसाइल के लिए दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में मांग बढ़ती जा रही है। फिलीपींस ने इसके लिए भारत के साथ डील काफ़ी पहले ही फाइनल कर ली

- तुर्की से निपटने के लिए भारत से ब्रह्मोस मिसाइल खरीद सकता है ग्रीस

थी तो मध्य पूर्व और अफ्रीकी देशों ने भी इस मिसाइल में रुचि दिखाई है। अब इन देशों में एक नाम ग्रीस का भी है, जो अपने दुश्मन तुर्की से निपटने के लिए इस मिसाइल को पाना चाहता है। ग्रीस के सेना प्रमुख जनरल दिमित्रिस ह्रूपिस अगले सप्ताह भारत की यात्रा पर पहुंचने वाले हैं। इस दौरान ग्रीस के भारत के साथ ब्रह्मोस मिसाइल के बारे में चर्चा करने की उम्मीद है। ग्रीस सेना प्रमुख यात्रा के दौरान सैन्य सहयोग कार्यक्रम पर हस्ताक्षर करेंगे।

अब सिसोदिया की न्यायिक हिरासत 18 अप्रैल तक बढ़ी

- सुनवाई से एक दिन पहले चिट्ठी सामने आई थी, इसमें कहा-जल्द ही बाहर मिलेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के पूर्व डिप्टी सीएम और आम आदमी पार्टी (एएपी) नेता मनीष सिसोदिया की न्यायिक हिरासत और 12 दिनों के लिए बढ़ गई है। दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने उन्हें 18 अप्रैल तक न्यायिक हिरासत में भेजा है। दरअसल, दिल्ली शराब नीति केस को लेकर तिहाड़ जेल में बंद सिसोदिया की हिरासत 6 अप्रैल को खत्म हो रही थी। उन्हें आज कोर्ट में पेश किया गया। ईडी ने आरोपियों की तरफ से देरी के अलग-अलग आधारों पर उनकी जमानत याचिका का विरोध किया। कोर्ट ने ईडी की आगे की दलील पर सुनवाई 10 अप्रैल दोपहर 2 बजे तक के लिए स्थगित कर दी है।

केरल के सीएम ने कांग्रेस के मैनिफेस्टो पर उठाया सवाल

- कहा- कांग्रेस के न्याय पत्र में सीए का जिक्र नहीं, 370 का भी विरोध नहीं किया



नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडिया गठबंधन में शामिल केरल की लेफ्ट सरकार ने कांग्रेस के मैनिफेस्टो पर सवाल उठाया है। राज्य के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने शनिवार को कहा- सीपीआई

(एम) के मैनिफेस्टो में सीए के रद्द करने की बात कही गई है, लेकिन कांग्रेस के घोषणापत्र में ऐसा कोई वादा नहीं किया गया है। विजयन ने कहा कि कांग्रेस आर्टिकल 370 को हटाए जाने के फैसले के खिलाफ भी प्रोटेस्ट नहीं कर पाई थी। कांग्रेस वोट के लिए अपने मूल्यों से समझौता करने को तैयार है। ऐसे घोषणापत्र के जरिए कांग्रेस ने देश की आम जनता और अल्पसंख्यकों को धोखा देने का काम किया है।

भाजपा ने जिले के 1879 बूथों पर मनाया स्थापना दिवस, भाजपा नेता और जनप्रतिनिधि पहुंचे अनेक बूथों पर संसदीय क्षेत्र के विकास के लिए कोई कसर नहीं छोड़ूंगी - सावित्री ठाकुर



सुबह सवेरे, धार। भाजपा ने जिले के 1879 बूथों पर मनाया स्थापना दिवस, भाजपा नेता और जनप्रतिनिधि पहुंचे अनेक बूथों पर . भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सामोनी ने भाजपा के स्थापना दिवस पर जिले के बदनावर विधानसभा की ग्राम पंचायत मुगड़का बूथ क्रमांक 192 पर कहा कि 6 अप्रैल 1980 को भाजपा की स्थापना हुई। पं.दीनदयाल उपाध्याय एवं डॉ.श्यामाप्रसाद मुखर्जी के अंत्योदय एकात्मवाद विचारधारा को लेकर गरीब कल्याण के लिए भाजपा की सरकारों ने कोई कसर नहीं छोड़ी। हमारा लक्ष्य है अंतिम छोर तक के व्यक्ति को आगे की पंक्ति में खड़ा करना। उन्होंने कहा कि भारतीय जनसंघ के प्रेरणास्रोत डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कश्मीर के लिए अपना बलिदान दे दिया, और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने एक झटके में धारा-370 उखाड़ फेंककर डॉ.मुखर्जी

जो की श्रद्धांजलि देने का कार्य किया। उन्होंने कहा कि 2014 से पहले भारत और 2024 का भारत की हम कल्पना करेंगे। मोदी जी के नेतृत्व में हर गरीब के लिए अनेक योजनाओं के माध्यम से विकास कार्यों को आगे बढ़ाया गया।

मनावर विधानसभा बाकानेर मंडल ग्राम पंचायत कोठड़ा के स्थापना दिवस पर भाजपा प्रत्याशी सावित्री ठाकुर ने कहा कि यह चुनाव प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लड़ रहे हैं भारत हमारा समृद्ध बने इसके लिए तीसरी बार होने जा रहे चुनाव में उन्हें ताकत देने का काम करें। उन्होंने कहा कि यह लोकसभा चुनाव भारत की प्रतिबद्धता के बीच है। कांग्रेस विकास का झूठा ढिंढोरा पीटती रही, और भाजपा की केन्द्रीय सरकार का नेतृत्व कर रहे नरेन्द्र मोदी जैसे महान नेता को ताकत देने की जरूरत है, जो कि 4 करोड़ पक्के मकान प्रधानमंत्री आवास योजना के लिए, 14

हजार करोड़ शौचालय का निर्माण 25 करोड़ से अधिक लोगों को गरीबी रेखा से निकालकर उनको समृद्ध बनाया गया। ऐसी अनेकों योजनायें हैं, जिन्होंने हर गरीब की तस्वीर को बदलकर विकास की दिशा से जोड़ने का कार्य किया है। उन्होंने स्थापना दिवस पर कहा कि नरेन्द्र मोदी की आंखों को वोट के माध्यम से हम सबको बदलना है, प्रचंड बहुमत के साथ आपकी बहन को आप सबका आशीर्वाद मिलें, और दिल्ली में सांसद बनकर तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने में उनका सहयोग हो।

भाजपा प्रदेश मंत्री जयदीप पटेल ने कुशी विधानसभा ग्राम डेहर बूथ क्रमांक 192 पर कहा कि भाजपा का लक्ष्य हर गरीब की सेवा करना और विकास की दिशा से जोड़ने का है। भारतीय जनसंघ से लेकर भाजपा संगठन के महापुरुषों ने वटवृक्ष को आगे बढ़ाने का काम किया। आज देश में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी विचारधारा

को लेकर राष्ट्र के विकास के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी है।

भाजपा जिला मोडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि भाजपा ने जिले के 1879 बूथों पर भाजपा का स्थापना दिवस मनाया। भाजपा नेता और जनप्रतिनिधि, जिला पदाधिकारी विधानसभा प्रभारी संयोजक सभी मंडल अध्यक्ष मंडल प्रभारी पहुंचे अनेक बूथों पर पहुंचकर बूथ विजय अभियान के 10 संगठन करणीय कार्य की जानकारी दी। जिले में विधायक कालू सिंह ठाकुर, भाजपा प्रदेश मंत्री जयदीप पटेल पूर्व जिला अध्यक्ष प्रभु राठौर, विनोद शर्मा, रमेश धाडीवाल, दिलीप पटौदिया, मोहन भायल जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेड़ा, वेलसिंह भूरिया शिवराम कन्नौज पूर्व विधायक सहित अनेक जनप्रतिनिधि अपने अपने चयनित बूथों पर जाकर भाजपा का स्थापना दिवस मनाया।

अब लोकसभा चुनाव में भी गूंजा ‘योगी मॉडल’

- बुलडोजर फॉर्मूला रहा हिट, चुनावी रणमिल सकता है फायदा

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने लॉ एंड ऑर्डर को लेकर जो प्रयोग किए, उसकी खूब चर्चा है। खासतौर से बीजेपी शासित दूसरे राज्य तो इस योगी मॉडल को अपनाते हुए भी नजर आए हैं। बुलडोजर ऐक्शन, लव जिहाद और गौ सुरक्षा को लेकर बने कानून इसमें प्रमुख हैं। यूपी सरकार की ओर से अब चुनावी रैलियों में भी लगातार यह दावा किया जाता रहा है कि कैसे उसने कानून और व्यवस्था को मजबूत किया है। साथ ही माफिया राज खत्म किया गया है जिससे राज्य में रोजगार और निवेश बढ़ा है। लोकसभा चुनाव के रण में इस सफलता को डबल इंजन सरकार के कामयाब फॉर्मूले के तौर पर पेश किया जा रहा है। साल 2020 में योगी आदित्यनाथ ने पहली बार बुलडोजर का इस्तेमाल किया और अपराधी के खिलाफ इसे त्वरित



ऐक्शन के तौर पर दिखाया गया। इसका इस्तेमाल गैंगस्टर विकास दुबे के कानपुर के बिकारू गांव में हुआ जहां उसकी कथित अवैध संपत्तियों को ढहा दिया गया। दरअसल, दुबे और उसके गुगों ने रेड के दौरान पुलिस अधिकारियों पर फायरिंग की थी। इस ऐक्शन को लेकर तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं सामने आईं।

भारत में चुनाव को प्रभावित कर सकता है चीन

माइक्रोसॉफ्ट ने चेताया, कहा-एआई के जरिए वोटर्स को भटकाने की तैयारी

बीजिंग/वॉशिंगटन (एजेंसी)। टेक कंपनी माइक्रोसॉफ्ट ने चेतावनी दी है कि चीन भारत में होने वाले लोकसभा चुनाव में रूकावट डालने की कोशिश करेगा। चीन ने ऐसा ही कुछ जनवरी में ताइवान में हुए

2024 दुनिया के लोकतांत्रिक इतिहास का सबसे अहम साल साबित होने जा रहा है। इस साल 63 देशों (और यूरोपीय यूनियन) में राष्ट्रपति और संसदीय चुनाव होंगे। दुनिया की कुल आबादी का 49 फीसदी हिस्सा



वोटिंग राइट्स का इस्तेमाल करेगा। माइक्रोसॉफ्ट ने अपने बयान में कहा, इस साल दुनिया भर में, विशेष रूप से भारत, दक्षिण कोरिया और अमेरिका में चुनाव होने वाले हैं। हमारा आंकलन है कि चीन अपने हितों को फायदा पहुंचाने वाला एआई जनरेटेड कंटेंट बनाएगा और लोगों तक इसे पहुंचाएगा। ब्रिटिश मीडिया द गार्जियन ने रिपोर्ट में लिखा कि माइक्रोसॉफ्ट ने चेतावनी दी है कि चीन की इस हकत का प्रभाव आने वाले समय में बढ़ेगा। माइक्रोसॉफ्ट ने कहा, एआई जनरेटेड कंटेंट का तुरंत प्रभाव तो कम नजर आएगा, लेकिन चीन जिस तरह इस टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल बढ़ा रहा है, उससे इसका असर आगे ज्यादा प्रभावी हो सकता है। टेक कंपनी माइक्रोसॉफ्ट ने कहा कि ताइवान के चुनाव को प्रभावित करने के लिए चीन ने एआई के जरिए गलत जानकारीयें सोशल मीडिया पर शेयर की थीं।

इस्तेमाल बढ़ा रहा है, उससे इसका असर आगे ज्यादा प्रभावी हो सकता है। टेक कंपनी माइक्रोसॉफ्ट ने कहा कि ताइवान के चुनाव को प्रभावित करने के लिए चीन ने एआई के जरिए गलत जानकारीयें सोशल मीडिया पर शेयर की थीं।

सागर में ट्रक और बाइक की भिड़ंत, दो की मौत बाइक को टक्कर मारते हुए पलटा तरबूज से भरा ट्रक,

सागर (नप्र)। सागर में जैसीनगर

थाना क्षेत्र के ग्राम हिरपुर के पास तेज रफ्तार ट्रक और बाइक की भिड़ंत हो गई। दुर्घटना में बाइक सवार दो लोगों की मौत हो गई। वहीं ट्रक अनियंत्रित होकर सड़क किनारे पलट गया। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शवों का पंचनामा बनाकर अस्पताल भेजा। मामले में मर्ग कायम कर पुलिस जांच कर रही है।

जानकारी के अनुसार सागर-सिलवानी स्टेट हाईवे पर ग्राम हिरपुर के पास सिलवानी की ओर से आ रहे ट्रक से बाइक की टक्कर हो गई। दुर्घटना में बाइक सवार सड़क पर जा गिरे। वहीं तरबूज से भरा ट्रक अनियंत्रित होकर पलट गया। घटना देख राहगीर मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचकर शवों का पंचनामा बनाया। जांच में मृतकों की पहचान वीरेंद्र गौड़ उम्र 40 साल निवासी जमुनिया, संजु अहिलवार उम्र 27 साल निवासी रमन ठेकापार, सुल्तानगंज थाना के रूप में हुई है। शव



का पीएम कराकर पुलिस ने परिवार वालों को सौंप दिए।

प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार तरबूज से भरा ट्रक सिलवानी की ओर से आ रहा था। वहीं बाइक सवार जैसीनगर की ओर से जा रहे थे। तभी हिरपुर गांव के पास दोनों वाहनों की आमने-सामने से टक्कर हो गई। टक्कर के बाद ट्रक अनियंत्रित हुआ और सड़क किनारे पलट गया। घटना के बाद ट्रक ड्राइवर मौके से भाग निकला। मामले में पुलिस प्रकरण दर्ज कर जांच कर रही है।

छात्रा के साथ छेड़छाड़ कर धमकाया

भोपाल। राजधानी में एक छात्रा के साथ कार्यालय में छेड़छाड़ कर उसे मुख्यमंत्री के नाम पर धमकाने का मामला सामने आया है। आरोपी छात्रा को यह कहकर धमका रहा था कि उसके चाचा पत्रकार हैं और चाचा की फोटो सीएम के साथ दिखाकर कहता मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। प्राप्त जानकारी के अनुसार नूतन कालेज की एमकाम की छात्रा को फिन्टेक एडू मेट्रो प्लाजा में कांउसलर का कार्य करने वाली छात्रा के साथ वहा काम करने वाले सत्यम त्रिपाठी ने केबिन में आकर बुरी नियत से मुंह दबाकर छेड़छाड़ की और धमकी देते हुए कहा कि किसी को बताया तो जान से मार दूंगा। नूतन कालेज की एमकाम की छात्रा को फिन्टेक एडू मेट्रो प्लाजा जो कंपनी में कांउसलर के रूप में कार्यरत है, काम करते समय सत्यम त्रिपाठी नामक व्यक्ति ने केबिन में आकर छेड़छाड़ की और जान से मारने की धमकी दी। धमकी देते हुए सत्यम त्रिपाठी ने कहा की मेरे चाचा पत्रकार है और मेरे बहुत संबंध हैं मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकते और चाचा की मुख्यमंत्री मोहन यादव के साथ फोटो दिखाकर मानसिक दबाव बनाया।

पेंडिंग केसों और फैसलों पर कमेंट से परेशान सीजेआई

वकीलों के सीजेआई चन्द्रचूड़ बोले-आप आम आदमी नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ ने कहा है कि न्यायपालिका के कंधे मजबूत हैं और वह प्रशंसा के साथ-साथ आलोचना भी सह सकता है, लेकिन लंबित मामलों या फैसलों पर हाल के दिनों में वकीलों की टिप्पणी बहुत परेशान करने वाली है। उन्होंने कहा कि बार के पदाधिकारियों और सदस्यों को न्यायिक फैसलों पर प्रतिक्रिया करते समय यह नहीं भूलना चाहिए कि वे अदालत के अधिकारी हैं, आम आदमी नहीं। सीजेआई शुक्रवार को हाई कोर्ट बार एसोसिएशन ऑफ नागपुर के शताब्दी वर्ष समारोह में बोल रहे थे। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने कहा कि न्यायपालिका बार-बार अपनी स्वतंत्रता और गैर-पक्षपातपूर्णता पर जोर देने के लिए आगे आई है। उन्होंने कहा, हालांकि, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि न्यायपालिका और बार की आजादी के बीच घनिष्ठ संबंध है। सीजेआई ने कहा कि एक संस्था के रूप में बार न्यायिक स्वतंत्रता, संवैधानिक मूल्यों और अदालत की गरिमा को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। चंद्रचूड़ ने कहा कि भारत जैसे जीवंत और तर्कशील लोकतंत्र में अधिकतर व्यक्तियों की राजनीतिक विचारधारा या झुकाव होता है। अरस्तू के शब्दों में मनुष्य राजनीतिक प्राणी हैं। वकील भी कोई अपवाद नहीं हैं। उन्होंने कहा, हालांकि, बार के सदस्यों के लिए किसी का सर्वोच्च हित पक्षपातपूर्ण हितों के साथ नहीं बल्कि अदालत और संविधान के साथ होना चाहिए। सीजेआई ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट की संवैधानिक पीठों के फैसले सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता की परिणति हैं।



संक्षिप्त समाचार

गुजरात में रूपाला के टिकट पर बढ़ी बीजेपी की मुश्किल

- अब क्षत्रिय महिलाओं ने दी विरोध में ‘जौहर’ की धमकी

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात में केंद्रीय मंत्री पुरषोत्तम रूपाला के बयान के खिलाफ आक्रोश कम नहीं हो रहा है। क्षत्रिय समाज की सात महिलाओं ने रानी पद्मावती और उनकी दासियों की तर्ज पर स्वाभिमान की रक्षा के लिए जौहर (आत्महत्या) करने की धमकी दी है। इसके बाद राजकोट के साथ गुजरात की राजनीति गरमा गई है। क्षत्रिय समाज की तरफ से लगातार यह मांग की जा रही है कि बीजेपी राजकोट से किसी और चुनाव लड़ाए।



क्षत्रिय समाज का अपमान करने वाले रूपाला की टिकट वापसी के लिए अब महिलाएं सामने आई है। महिलाओं के रूपाला के घर के बाहर आत्महत्या करने का वीडियो सामने आने के बाद महिलाओं के घर के बाहर सुरक्षा बढ़ा दी गई है। महिलाओं ने जौहर से पहले मेहंदी भी रखवाई थी। आज वे कुछ मंदिर के दर्शन करने के लिए जाने वाली हैं। महिलाओं ने जौहर की धमकी पुरषोत्तम रूपाला का टिकट वापस नहीं लिए जाने के बाद दी है, तो वहीं बीजेपी के केंडीडेट पुरषोत्तम रूपाला ने दिल्ली से लौटने के बाद राजकोट में प्रचार शुरू कर दिया था।

बरेली दंगों के मास्टर माइंड तौकीर रजा की बर्दी मुश्किलें

- बहू ने की ईडी जांच की मांग, कहा-देश के लिए खतरा है

बरेली/लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के बरेली में जिले 2010 में हुए दंगे के दोषी मौलाना तौकीर रजा की मुश्किलें बढ़ती जा रही है। कोर्ट ने मौलाना तौकीर को दंगे के लिए मास्टरमाइंड मानते हुए दोषी भी उहाराया था। इसी बीच आला हजरत खानदान की बहू रही निदा खान ने मौलाना तौकीर रजा पर जमकर हमला बोला है। निदा ने बीजेपी सरकार से मौलाना तौकीर के खिलाफ ईडी की जांच कराने की मांग की है। निदा खान ने कहा, मौलाना के पास ना ही कोई फैक्ट्री है ना



बिजनेस, लेकिन फिर भी इतनी आलीशान जिंदगी जी रहे हैं। लड़का ऑस्ट्रेलिया में पढ़ रहा है। आखिर इतना पैसा कहा से आ रहा है। निदा ने कहा कि मौलाना को किसी ऐसी जगह से फंडिंग हो रही है, जिससे हमारे देश को नुकसान पहुंच सकता है या फिर अंदर ही अंदर नुकसान पहुंचा रहा है। तौकीर रजा की बहू निदा खान ने अपना वीडियो बयान जारी करते हुए कहा कि यूपी में बीजेपी सरकार होने के कारण सूबे का लॉ एंड ऑर्डर बहुत सख्त है। मौलाना तौकीर रजा 2010 के दंगों में आरोपी हैं।

परिक्लमा

न्याय पत्र बनाम संकल्प पत्र को लेकर भिड़ती कांग्रेस व भाजपा



अरुण पटेल

लेखक सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक हैं।
संपर्क-
09425010804
07999673990

जहां एक ओर मध्यप्रदेश में आईएनडीआईए के महागठबंधन को मध्यप्रदेश के खजुराहो लोकसभा क्षेत्र में धीरे से जोर का झटका लगा है और उसकी उम्मीदवार जो समाजवादी पार्टी की प्रत्याशी थीं का नामांकन पत्र निरस्त होने के साथ मीरा यादव चुनावी मैदान से बाहर हो गयी हैं, तो वहीं दूसरी ओर पांच न्याय और पच्चीस वायदों की गारंटी पर आधारित कांग्रेस के न्याय-पत्र जिसे पार्टी का घोषणापत्र माना जा रहा है को लेकर कांग्रेस पर तीखा शाब्दिक हमला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया है। उन्होंने राजस्थान के चुरु की सभा में कहा कि हम घोषणा पत्र नहीं संकल्प पत्र लाते हैं और उसे पूरा करते हैं। उनका कहना था कि नीयत सही रहे तो नतीजे भी आते हैं। भाजपा प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने कांग्रेस के घोषणापत्र को झूठ का पुलिंदा निरुपित करते हुए कहा है कि चार पीढ़ियों के शासन के बाद कांग्रेस अब कमाल दिखाने का दावा कर रही है। इस प्रकार अब आने वाले दिनों में जैसे-जैसे चुनावी रंगत चढ़ती जायेगी वैसे-वैसे एक-दूसरे पर पूरी तरह से बढ़त लेने की हर संभव कोशिश आईएनडीआईए महागठबंधन और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में एनडीए गठबंधन करेंगे, और इसमें देखने वाली बात यही होगी कि शाब्दिक शिष्टाचार व मर्यादा की सीमारेखा कितनी तार-तार होती है।

कांग्रेस अध्यक्ष महिक्कार्जुन खरगे, कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी तथा कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी की उपस्थिति में जारी घोषणापत्र जिसे न्याय -पत्र नाम दिया गया है, उसमें पांच न्याय किसान, महिला, युवा, श्रमिक और हिस्सेदारी तथा 25 गारंटियों पर जोर दिया गया है। इनमें दिहाड़ी मजदूरों को कम से कम 400 रुपये प्रतिदिन मजदूरी देने, गरीब महिलाओं को सालाना एक लाख रुपये देने, जातिगत जनगणना कराने और एमएसपी को कानून बनाने जैसे वायदे किये गये हैं। भूमिहीनों को जमीन देने, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और सामान्य वर्ग के लिए आरक्षण पर लगी 50 प्रतिशत की सीमा को समाप्त करने, आर्थिक रुप से पिछड़े लोगों को 10 प्रतिशत आरक्षण बिना भेदभाव सभी जाति-समूहों के लिए लागू करने और एसटी, एससी और ओबीसी के सभी रिक्त पद एक साल में भरने का वायदा किया गया है। कांग्रेस ने अपने न्याय -पत्र में सबसे ज्यादा वायदे युवाओं से किये हैं और ये भी वायदा किया है कि अग्निपथ योजना खत्म कर देंगे, 25 लाख रुपये का हेल्थ इश्योरेंस देंगे तथा स्टार्टअप के लिए फंड दिलायेगे

ताकि 40 वर्ष से कम उम्र के लोग अपना कारोबार चालू कर सकें। सर्वाधिक 25 वायदे युवाओं से किये गये हैं। एक ओर जहां प्रधानंत्री नरेंद्र मोदी ने भाजपा के लिए 370 और सहयोगियों को मिलाकर 400 से अधिक लोकसभा सीटें जीतने का नारा दिया है वहीं दूसरी उसके जबाब में फिलहाल कांग्रेस के चुनावी वायदे 340 पार हो गये हैं। कांग्रेस जिन पांच न्याय और 25 वायदों की गारंटियों के भरोसे लोकसभा चुनाव



में बाजी मारने की कोशिश कर रही है उनमें प्रमुख वायदे इस प्रकार हैं- नौकरी, सामाजिक न्याय, युवा महिला व किसान-मजदूर बने धुरी, युवाओं को 30 लाख नौकरियां व 25 वर्ष तक के युवाओं को प्रतिवर्ष एक लाख देने का वायदा, केंद्रीय नौकरियों में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण, हर गरीब परिवार की एक महिला सदस्य को सालाना एक लाख नगद देने की घोषणा, देश में सभी के लिये 25 लाख का कैशलेस स्वास्थ्य बीमा देने का ऐलान, जातिगत जनगणना कराने और किसानों को एमएसपी को कानूनी गारंटी देने का वायदा, भाजपा-राजग के 10 वर्ष के शासन के दौरान पारित विवादित कानूनों की समीक्षा, नोटबंदी, चुनावी बांड, पेगासस, राफेल जैसे मामलों में भ्रष्टाचार की जांच का ऐलान, राष्ट्रीय शिक्षा नीति की समीक्षा, वर्तमान मणिपुर सरकार को हटाया जाना, महिला आरक्षण को 2029 से नहीं 2025 से ही अमल में लाने, जम्मू कश्मीर को राज्य का दर्जा बहाल करना व दिल्ली के एलजी की शक्तियां कम करना तथा पुडुचेरी को नया राज्य बनाना आदि शामिल हैं। भाजपा प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने कांग्रेस के घोषणापत्र को झूठ का पुलिंदा करार देते हुए कहा कि चार पीढ़ियों के शासन के बाद कांग्रेस अब सत्ता में आने के लिए कमाल दिखाने का दावा कर रही है। घोषणापत्र को न्याय-पत्र नाम देने पर त्रिवेदी ने कहा कि एक तरह से कांग्रेस ने स्वीकार कर लिया है कि सीधे तौर

पर देश में लगभग 60 साल तक शासन के दौरान उन्होंने न्याय नहीं किया। भाजपा ने घोषणा पत्र में न्यूयार्क और थार्डलैंड की तस्वीरों को लेकर भी कांग्रेस पर निशाना साधा। जिसने कभी भी भारत के युवाओं की क्षमता, आर्थिक क्षमता व सैन्य क्षमता, औद्योगिक क्षमता एवं सुरक्षा के साथ न्याय नहीं किया वह कांग्रेस आज न्याय की बात कर रही है। उन्होंने कहा कि हमारी फौज न्याय के मैदान में जंग जीतकर आती थी और उसे राजनीतिक



टेबल पर सरकार लुटा कर चली जाती थी। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने कभी भी भारत की सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक समरसता के साथ न्याय नहीं किया और वेष बदल कर जनता को बरगलाने की कोशिश कर रही है।

नामांकन पत्र निरस्त होने पर तकरार

खजुराहो लोकसभा क्षेत्र इन दिनों पूरे प्रदेश में ही नहीं अपितु देश में अनायास ही चर्चित हो उठा और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष सांसद विष्णु दत्त शर्मा के लिये चुनावी लड़ाई एकतरफा और आसान उस समय हो गयी जब जिला निर्वाचन अधिकारी सुरेश कुमार ने आईएनडीआईए महागठबंधन की सपा प्रत्याशी मीरा यादव का नामांकन पत्र निरस्त कर दिया। इसका कारण यह बताया गया है कि नामांकन पत्र में एक स्थान पर अभ्यार्थी के हस्ताक्षर नहीं है और नई मतदाता सूची की सत्यापित प्रति संलग्न नहीं की गयी है। नामांकन पत्र इसी आधार पर निरस्त कर दिया गया। चूंकि मीरा यादव खजुराहो संसदीय क्षेत्र की मतदाता नहीं है इसलिए जहां की मतदाता सूची में उनका नाम है वहां के सक्षम अधिकारी से सत्यापित कराकर नई सूची बना करना था। उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश की 29 लोकसभा सीटों में से कांग्रेस 28 सीटों पर चुनाव लड़ रही है, खजुराहो सीट उसने समाजवादी पार्टी के लिए छोड़ दी थी। यहां से प्रत्याशी को लेकर लगता है

समाजवादी पार्टी उहापोह में रही। पहले उसने खजुराहो से डा. मनोज यादव को अपना उम्मीदवार बनाया था उसके बाद उनके स्थान पर मीरा यादव को प्रत्याशी घोषित किया गया। पांच अप्रैल यानी शुक्रवार को नामांकन पत्र की जांच हुई जिसमें सपा उम्मीदवार मीरा यादव का नामांकन पत्र अपूर्ण होने के कारण निरस्त कर दिया गया। मीरा यादव के पति दीप नारायण यादव ने कहा कि काफी समय था निर्वाचन अधिकारी हमें बता देते तो हम कमी की पूर्ति कर देते, अब हम चुनाव आयोग और अदालत का दरवाजा खटखटायेंगे। मीरा यादव का नामांकन निरस्त होने को लेकर यह भी चर्चा चल रही है कि क्या मीरा ने खुद ही अपना पर्चा खारिज करने की तैयारी तो नहीं कर ली थी।

और यह भी.....!

मीरा यादव का नामांकन निरस्त होने से इंडिया गठबंधन के नेता आगबबूला हैं और वे तरह-तरह के आरोप लगा रहे हैं। मध्यप्रदेश के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन का इस मामले में कहना है कि बाकी उम्मीदवार चार से पांच सेट में नामांकन भर रहे हैं लेकिन सपा उम्मीदवार ने एक ही सेट दिया। जिला निर्वाचन अधिकारी ने एक दिन पहले ही मीरा यादव से कहा था कि एक जगह पर उनके हस्ताक्षर नहीं हैं, मीरा यादव यह कहकर चली गई हैं कि बाहर मीडिया से बात करके लौटती हूं और वे वापस नहीं आईं। मीरा के पति दीप नारायण यादव कह रहे हैं कि अभी 15 उम्मीदवार भी हैं और कांग्रेस से चर्चा करने के बाद किसी को समर्थन दे दिया जायेगा। उन्होंने जिला निर्वाचन अधिकारी पर आरोप लगाया है कि अनपढ़ उम्मीदवार है तो उसके फार्म को दुरुस्त कराने की जिम्मेदारी निर्वाचन अधिकारी की है लेकिन उसने कोई मदद नहीं की। सपा सुप्रिमी अखिलेश यादव का आरोप है कि सरेआम लोकतंत्र की हत्या की गयी। हस्ताक्षर नहीं थे तो फिर देखने वाले अधिकारी ने फार्म लिया ही क्यों। पूर्व केंद्रीय मंत्री कांग्रेस नेता अरुण यादव को लगता है कि यह एक सुनिश्चित साजिश थी और भाजपा प्रत्याशी विष्णुदत्त शर्मा के दबाव में यह हुआ है और यह राष्ट्रद्रोह की श्रेणी में आता है। मध्यप्रदेश में ऐसी घटना पहली बार नहीं हुई है बल्कि इससे पहले 2009 में भी ऐसी ही स्थिति उस समय निर्मित हुई थी जब भाजपा नेता सुषमा स्वराज के सामने विदिशा में राजकुमार पटेल को कांग्रेस प्रत्याशी बनाया गया, पटेल भी जी-फार्म की मूलप्रति नहीं जमा कर पाये थे इसलिए तकनीकी कारणों से उनका नामांकन पत्र निरस्त हो गया था।

भाजपा का दावा स्थापना दिवस पर एक लाख से अधिक नए सदस्यों को पार्टी से जोड़ा

प्रत्येक बूथ पर दिलाई भाजपा की सदस्यता - मुख्यमंत्री

प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा बोले- दुश्मन बहुत चतुर और चालाक है,उससे सजग रहकर बूथ पर सबक सिखाना है

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा ने शनिवार को प्रदेश कार्यालय में पार्टी के स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित किया। दुश्मन बहुत चतुर और चालाक है, वह झूठ और फरेब की राजनीति कर माहौल बिगाड़ने का काम कर रहा है, उससे सजग रहकर बूथ पर सबक सिखाना है। कांग्रेस ने हमेशा



तृष्ठीकरण, आतंकवाद को बढ़ावा दिया है। कांग्रेस के शासनकाल में आए दिन आतंकी हमले होते थे, भ्रष्टाचार होता था। आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश विकसित व समृद्धशाली भारत बनने की ओर अग्रसर है। गुलामी के प्रतीक कांग्रेस को बूथ पर समाप्त करना है। हर बूथ पर 370 नए मतदाता जोड़कर डा. मुखर्जी को सच्ची श्रद्धांजलि देंगे। शर्मा ने दावा करते हुए कहा कि भाजपा के स्थापना दिवस पर प्रदेश के 64,523 बूथों पर एक लाख से अधिक नए सदस्यों को पार्टी से जोड़ा गया है। हमें प्रदेश में हर बूथ पर 370 नए मतदाता जोड़ना है और 10 प्रतिशत वोट शेयर बढ़ाकर नया इतिहास रचना है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुलामी के प्रतीकों को देश से हटा दिया है। देश में गुलामी की एक ही प्रतीक कांग्रेस बची है, जिसे चुनाव में हर बूथ पर समाप्त करना है। शर्मा ने कहा कि आज देश में गुलामी की एक ही प्रतीक कांग्रेस बची है, उसे लोकसभा चुनाव में बूथ-बूथ पर समाप्त कर 10 प्रतिशत वोट शेयर बढ़ाकर कांग्रेस को समाप्त करना है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा, क्षेत्रीय संगठन महामंत्री अजय जामवाल, लोकसभा चुनाव के प्रदेश प्रभारी डा. महेंद्र सिंह, राज्यसभा सदस्य उमेशनाथ महाराज एवं पूर्व मंत्री व न्यू ज्वाइनिंग टोली के प्रदेश

संयोजक नरोत्तम मिश्रा ने पार्टी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं के साथ भारतीय जनता पार्टी के 45 वें स्थापना दिवस पर प्रदेश कार्यालय में झंडा फहराया एवं महापुरुषों की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर नमन किया।

मोदी की विकास की आंधी के आगे इंडी गठबंधन मैदान छोड़ गई- मुख्यमंत्री- मुख्यमंत्री ने प्रदेश के बूथ

कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि पार्टी आज 45वां स्थापना दिवस मना रही है लेकिन जब हम देश के लाखों साल पुराने इतिहास को देखें तो यह बहुत छोटा दिखाई देता है। आजादी के बाद कांग्रेस ने देश में कुछ नहीं किया और देश को दुरावस्था की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया। 2014 में जब प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भाजपा की सरकार बनी तो देश में गरीब कल्याण के कार्य किए गए।

इसी का परिणाम है कि आज भारत विकसित देशों की श्रेणी में खड़ा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि मोदी की विकास की आंधी के आगे इंडी गठबंधन मैदान छोड़ गई है। कांग्रेस ने अपने घोषणा पत्र में उल्लेख किया है कि नई शिक्षा नीति में संशोधन करेंगे। यह वही कांग्रेस है जिसने पाठ्यक्रमों से भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण के इतिहास को हटाकर हमारी सनातन संस्कृति के साथ खिलवाड़ किया था। जिसने भगवान श्रीराम के प्राण प्रतिष्ठा का न्यौता ठुकरा दिया, उससे क्या उम्मीद की जा सकती है।

कांग्रेस कह रही है कि अग्नि वीर योजना बंद करेंगे। यह उन नौजवान युवाओं का अपमान है, जो सेना में जाकर देश की सेवा करना चाहते हैं। कांग्रेस ने हमेशा तृष्ठीकरण, आतंकवाद को बढ़ावा दिया है। कांग्रेसी बहुत चालक और झूठे हैं, सजग रहकर इन्हें सबक सिखाना है। अबकी बार हम 29 की 29 सीटें जीतकर 400 के संकल्प को पूरा करेंगे।

सिंगरौली (नप्र)। मध्यप्रदेश में बीजेपी लोकसभा चुनाव को लेकर प्रचार अभियान तेज कर दिया है। इसी के तहत रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शनिवार को सिंगरौली और सीधी में चुनावी सभाओं को संबोधित किया। उन्होंने कार्यकर्ताओं में जीत का जोश भरा।

राजनाथ सिंह ने राहुल गांधी को राजनीति का फिनिशर कहा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस आज पूरे देश में खत्म हो गई। कई नेता कांग्रेस छोड़ रहे। जिस तरह क्रिकेट में धोनी फिनिशर है। उसी तरह राजनीति में राहुल गांधी कांग्रेस के फिनिशर हैं।

सिंगरौली में रक्षा मंत्री ने 'एक राष्ट्र, एक चुनाव' की बात कही। उन्होंने कहा कि इससे देश मजबूत होगा। जनता अपने वोट का बेहतर इस्तेमाल कर सकेगी। खरीद-फरोख्त रोकने का भी यही उपाय है। देश में 'एक राष्ट्र, एक चुनाव' होना चाहिए।

कांग्रेस लोगों को डराकर उनके बीच नफरत पैदा करती है- रक्षा मंत्री ने कहा- मैं देशवासियों को आश्वासन करना चाहता हूँ कि हमारे देश की सीमाएं पूरी तरह सुरक्षित हैं। कांग्रेस सरकार के दौरान किसी न किसी राज्य में आतंकवादी घटनाएं होती रहती थीं। कांग्रेस और उसके सहयोगियों दलों के नेता लोगों को डराकर उनके बीच नफरत पैदा करते हैं। भाजपा कभी भी जाति, धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं करती, बल्कि हम न्याय और

म.प्र.की सभी 29 सीटों पर मुकाबले की तस्वीर साफ

बाकी 3 सीटों पर कांग्रेस प्रत्याशी घोषित, ग्वालियर-मुरैना से पूर्व विधायकों को उतारा

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में लोकसभा चुनाव के लिए सभी 29 सीटों पर भाजपा-कांग्रेस के बीच मुकाबले की तस्वीर साफ हो गई है। शनिवार को कांग्रेस ने मध्यप्रदेश की बाकी बची 3 सीटों पर भी प्रत्याशियों के नामों का ऐलान कर दिया है। ग्वालियर से पूर्व विधायक प्रवीण पाठक, मुरैना से पूर्व विधायक सत्यपाल सिंह सिकरवार (नीटू) और खंडवा से नरेंद्र पटेल को टिकट दिया है।



खंडवा में नरेंद्र पटेल का भाजपा के ज्ञानेश्वर पाटिल से मुकाबला है। कांग्रेस ने मुरैना में भाजपा के शिवमंगल सिंह के सामने सत्यपाल सिंह सिकरवार को मैदान में उतारा है। वहीं, ग्वालियर में भाजपा के भारत सिंह कुशवाह के सामने प्रवीण पाठक को टिकट दिया है। कांग्रेस ने अब तक मध्यप्रदेश की 29 सीटों में से 28 पर उम्मीदवारों के नामों का ऐलान कर दिया है। जबकि खजुराहो सीट सपा के लिए छोड़ी गई है। खजुराहो सीट से समाजवादी पार्टी की प्रत्याशी मीरा दीपनारायण यादव का नामांकन फॉर्म शुक्रवार को रीजेक्ट हो गया है।



मानवता की राजनीति करने वाले लोग हैं।

अयोध्या में भव्य राम मंदिर बना, राम राज्य की शुरुआत हो चुकी- राजनाथ सिंह ने कहा कि बीजेपी जो कहती है, वो करती है। आज अयोध्या की धरती पर भव्य राम मंदिर बन गया है। रामलला अपनी कुटिया से निकलकर महल पहुंच चुके हैं। अब राम राज्य आने की शुरुआत हो चुकी है। राजनाथ सिंह ने ये भी कहा कि जब से मोदी जी भारत के प्रधानमंत्री बने हैं। अंतर्राष्ट्रीय जगत में भारत की प्रतिष्ठा और कद बढ़ा है।

राहुल गांधी फिनिशर, कांग्रेस खत्म हो गई- कभी कांग्रेस का देश की राजनीति में वर्चस्व था। आज कांग्रेस सारे देश में खत्म हो गई। मैं सोचता हूँ ऐसा क्यों हुआ। मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूँ कि क्रिकेट में सबसे जानामाना फिनिशर कौन है। धोनी। इसी तरह भारत की राजनीति का अव्वल फिनिशर कौन है, हमसे कोई पूछे तो उत्तर है राहुल गांधी। यही कारण है कि बहुत सारे नेता



कांग्रेस तु चल फिर मैं आईं। आपने देखा होगा जहां भी कांग्रेस आई, वहां करण पण्डित गया।

2047 में भारत सुपर पावर बन जाएगा- भारत अर्थव्यवस्था के मामले में 11 स्थान पर दुनिया में था। मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद 2 साल पहले से पांचवें स्थान पर आ चुका है। 2027 के आते-आते भारत टॉप 3 अर्थव्यवस्था बन जाएगा। 2047 या उससे कुछ वर्षों के बाद भारत दुनिया में सुपर पावर बन जाएगा।

मध्यप्रदेश तेजी से विकास कर रहा- मैं जब

कांग्रेस छोड़ गए।

जहां भी कांग्रेस आई, वहां करण पण्डित गया- राजनाथ सिंह ने कहा- शायद ही कांग्रेस की कोई ऐसी सरकार रही हो, जिस पर भ्रष्टाचार के आरोप नहीं लगे हों। कांग्रेस का और भ्रष्टाचार का अटूट रिश्ता है। मैं उसकी कल्पना नहीं कर सकता हूँ। मैंने एक फिल्म देखी थी मैंने प्यार किया। उसमें गाना था 'तू चल मैं आई' ऐसा ही रिश्ता कांग्रेस का और भ्रष्टाचार का है। करण कहता है, ऐ

कांग्रेस तु चल फिर मैं आईं। आपने देखा होगा जहां भी कांग्रेस आई, वहां करण पण्डित गया।

2047 में भारत सुपर पावर बन जाएगा- भारत अर्थव्यवस्था के मामले में 11 स्थान पर दुनिया में था। मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद 2 साल पहले से पांचवें स्थान पर आ चुका है। 2027 के आते-आते भारत टॉप 3 अर्थव्यवस्था बन जाएगा। 2047 या उससे कुछ वर्षों के बाद भारत दुनिया में सुपर पावर बन जाएगा।

मध्यप्रदेश तेजी से विकास कर रहा- मैं जब

धार की भोजशाला में सर्वे का 16वां दिन

एएसआई की टीम कर रही वॉशिंग, क्लीनिंग और ब्रशिंग, खुदाई में मिली सीढ़ियां



एएसआई के 25 सदस्य व 30 मजदूर हैं।

इनमें हो रहा काम- भोजशाला में सर्वे के दौरान लोहे की कंधी, प्लास्टिक की कंधी, प्लास्टिक के ब्रश, छोटी झाड़ू, छोटे-छोटे पाइप जैसे संसाधनों का उपयोग किया जा रहा है। वॉशिंग, क्लीनिंग और ब्रशिंग

के साथ ही केमिकल की मदद भी ली जा रही है। भोजशाला के मुख्य भवन के आसपास कुल 13 स्थानों पर टैंच से चिह्नित किया गया था, जिसमें से अभी 3 स्थानों पर ही मिट्टी हटाने का काम हो रहा है। आज भी इन स्थानों से छोटे-छोटे औजारों से मिट्टी हटाकर परीक्षण किया जाएगा।

दिग्विजय के करीबी रामलाल मालवीय ने कांग्रेस छोड़ी

भोपाल (नप्र)। भारतीय जनता पार्टी शनिवार को अपना स्थापना दिवस मना रही है। पार्टी का दावा है कि प्रदेश में 64523 बूथों पर हो रहे कार्यक्रमों में 1 लाख कांग्रेस या दूसरे दलों के लोग बीजेपी जॉइन करेंगे। भाजपा के इस दावे पर मध्यप्रदेश में बहुजन समाज पार्टी के स्टार प्रचारक अवधेश प्रताप सिंह राठौर ने कहा, मैं भाजपा से ये पूछना चाहता हूँ कि आप ही लोग ये कहते थे कि

कांग्रेस के पास चुनाव लड़ने के लिए लोग नहीं हैं। अब जिस पार्टी के पास चुनाव लड़ने के लिए नेता नहीं हैं, तो आप कौन से 1 लाख कांग्रेसियों को भाजपा में शामिल कर रहे हैं। उन्होंने कहा, मेरे एक सलाह है कि भाजपा कार्यालय पर अब ये लिख देना चाहिए- कांग्रेस द्वारा आउटसोर्ट पर संचालित भाजपा। कांग्रेस के लोग भाजपा चला रहे हैं। अजय विरनोई, कैलाश विजयवीर्य जैसे पुराने खांटी भाजपाइयों को

कहना पड़ रहा है कि जिनकी गालियां सुनीं, उन्हें लेना पड़ रहा है। मजबूरी में स्वागत करना पड़ रहा है। जो कांग्रेसी भाजपा में जा रहे हैं, वे भी आउटसोर्स वर्कर हैं। तीन बार के विधायक हैं रामलाल मालवीय- भाजपा प्रदेश कार्यालय में आज उज्जैन के घंटिया से पूर्व विधायक रामलाल मालवीय समेत 3 दर्जन से अधिक कांग्रेस नेता भाजपा में शामिल हो गए।

पुस्तक समीक्षा

हरि जोशी

समीक्षक



हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रवीन्द्रनाथ त्यागी, लक्ष्मीकांत वैष्णव, अजातशत्रु,ज्ञान चतुर्वेदी जैसे व्यंग्य के सशक्त हस्ताक्षरों को पढ़ते रहने के बाद ये बात समझ आई कि व्यंग्य रचना में दो चार पंक्तियाँ या पैरेग्राफ ही उसे चुटीला और यादगार बनाती है जबकि कहानी बहुत विस्तार मांगती है। कुछ पंक्तियों की धार ही व्यंग्य को व्यंग्य बनाती है। वन लाइनर पंच।

‘फटे में टांग’ व्यंग्यकार मोहन वर्मा का ताज़ा व्यंग्य संग्रह है जो बोधि प्रकाशन जयपुर से प्रकाशित हुआ है जिसमें उनके विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित 45 व्यंग्य संग्रहित हैं। इन व्यंग्यों को पढ़कर लगा कि मोहन वर्मा ने न सिर्फ फटे में टांग डाली है बल्कि कहानी असपास की दुनिया, परिवेश विडम्बनाओं, विद्वरूपताओं, असमानताओं, असंवेदनशीलता,और अपने आसपास बिखरी विसंगतियों को असहमति की लात मारी है। साहित्य की किसी भी विधा में लेखक जब संवेदना के स्तर पर व्यवस्था से असहमत होता है तो कलम से निकली रचना खुद ब खुद बोलती है। मोहन वर्मा अपनी रचनाओं में व्यवस्था पर सिर्फ व्यंग्य ही नहीं करते बल्कि कई दफा वे सुझाव भी देते है और ये सुझाव बदलाव की अपेक्षाओं से सराबोर दिखाई देते हैं। ये व्यंग्य जीवन की रोजमर्रा

विसंगतियों पर रोचक कटाक्ष है, फटे में टांग

की छोटी छोटी घटनाओं और अनुभवों के कटाक्ष भरे विवरणों को व्यंग्य में लपेटकर पाठकों के सामने रखते है।

महानगरों से लेकर छोटे छोटे कस्बों के साहित्य की अपनीराजनीति होती है जिसे ‘किससा तोता मैना’ में अच्छे से लपेटा गया है। ‘ तू मेरी पीठ खुजा,मैं तेरी पीठ खोजाँलूँ ’ तू मुझे बुला मैं तुझे बुलालूँ के फार्मुले के साथ कस्बे के भारत भवन बन जाने का अच्छा वर्णन है। सोशल मीडिया के इस समय में ‘साहित्य शिरोमणी बैचनजी’के जरिये छुटपछुटे साहित्यकारों(?) की सम्मान के लिए छटपटाहट व्यंग्य गुरुगुदाता है। मोहन वर्मा ने अपने व्यंग्यों में छर्रे और गरम केटिलयों का विषयानुकूल उपयोग किया है जो व्यंग्य को और धारदार बनाता है। ‘नेताजी की घोड़ी’ हो या फिर ‘जिनकी तुत्ती बोलती है’ ऐसे व्यंग्य है जो रुतबे के सामाजिक प्रभाव की परतें खोलते हैं।

विविधरंगी इन व्यंग्यों में कोरोना काल के बाद शादी में खाना खाने का आनंद लेते लोगों पर ‘शादी हो रई है खाना खाने का’ हो या फिर पर्यावरण दिवस पर दिखावे का असली चेहरा दिखाता व्यंग्य ‘पर्यावरण दिवस चिंता और चिंतन’हो, राजनीति में आयराम गयाराम को लेकर ‘लौट के बुढ़ू घर को आवे’हो या दोनों हाथों में लड्डू की कामना वालों पर कटाक्ष हो, हर व्यंग्य में ताजगी के साथ तीखापन है।



व्यंग्यकार ने ‘भीड़ में गुम आम आदमी’ व्यंग्य के जरिये आम आदमी की पीड़ा को शब्दों में उकेरा है तो इंदौरी चटोरेपन पर भी कलम चलाई है।वर्तमान में पार्षद पति, महापौर पति, या मुख्यमंत्री पत्नी का जो चलन चला है उसपर ‘विकास करेंगे भिया’ व्यंग्य एक अच्छा तंज है। ‘माँ मैंने बी ए पास कर लिया है’ स्वर्णिम समय पर एक रोचक रचना है। ऐसा ही एक और रोचक व्यंग्य है ‘छोटे छोटे कस्बों का बड़ा बड़ा प्रेम’। राजनीति और सार्वजनिक जीवन में संस्थाओं में महत्वाकांशी लोगों पर लिखा व्यंग्य ‘तराजू में मेढक तौलना’ भी रोचक है।

जैसा कि यह सर्वमान्य सत्य है कि व्यंग्य की जान कुछ खास पंक्तियाँ ही होती है मोहन वर्मा के अलग अलग व्यंग्यों में ये खास पंक्तियाँ बार बार उभरकर आईं। व्यंग्यों में निहित सन्देश भी मारक है जैसे ‘टोपीबाजों से जरा बचके’या पागल नहीं है देश की चिंता करने वाले ।कुल जमा इन व्यंग्य आलेखों में अपने आसपास बिखरे विषयों पर प्रचलित कहावतों और मुहावरों के माध्यम से पैनी नज़र डाली गई है। हों कुछ विषयों और पंक्तियों को लेखक ने दोहराया भी है जिससे बचा जा सकता था। कहीं कहीं विषय को समेटने की जल्दबाजी भी नज़र आई। बहरहाल रचनाएँ रोचक,पठनीय,और मारक है।

सम्मान एवं अपनेपन के हकदार हैं बुजुर्ग

विचार

अनुराग मनीन्द्र

समीक्षक



परिवार रूपी इमारत की नींव होते हैं बुजुर्ग ! आज के बदलते दौर में संयुक्त परिवार की अवधारणा खत्म-सी होती जा रही है एवं एकल परिवारों का चलन जोरों पर है। पति-पत्नी और बच्चे, बस हो गया परिवार पूरा ! ऐसे में घर के बुजुर्ग प्रायः एकाकी एवं उपेक्षित जीवन जीने को अभिशास हैं।

परिवार के साथ रहने वाले बुजुर्गों की स्थिति भी ज्यादातर मामलों में ‘भीड़ में तन्हा’ जैसी होती है। वृद्धावस्था में प्रायः लोग शारीरिक एवं मानसिक तौर पे दुर्बल हो जाते हैं। ऐसे में उन्हें पोषक आहार, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं, उचित देखभाल के साथ-साथ शारीरिक एवं भावनात्मक सहारे की अधिक आवश्यकता होती है। बुजुर्ग चाहते हैं कि घर के अन्य सदस्य उनके साथ बैठें, उनकी बातें सुनें, उनके साथ समय बिताएं ; लेकिन प्रायः ऐसा नहीं हो पाता। ऐसे में वे अपनों के साथ रहकर भी एकाकी, हताशा एवं उपेक्षित महसूस करते हैं।

ऐसा नहीं कि निम्न या मध्यमवर्गीय परिवारों में ही बुजुर्ग उपेक्षा के शिकार हैं। बहुत-से उच्च पदस्थ सेवानिवृत्त अधिकारी एवं किसी जमाने में समृद्धशाली रहे लोग भी कई वजहों से अपनी वृद्धावस्था में एकाकी एवं उपेक्षित जीवन जीने को मजबूर हैं।

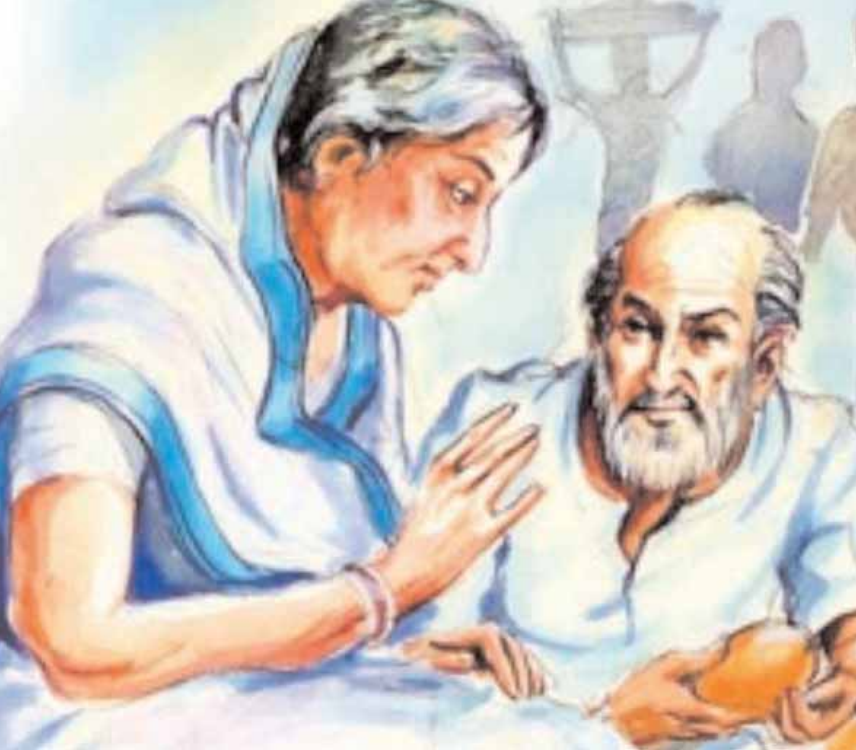
संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार साल 2022 में भारत में बुजुर्गों की संख्या 14.9 करोड़ थी। 2050 तक यह संख्या 34.7 करोड़, यानी दोगुने से भी अधिक होने का अनुमान है। जिस रफ्तार से बुजुर्गों की आबादी बढ़ रही है, उसी रफ्तार से उनके प्रति उपेक्षा एवं बदसलूकी के मामले भी बढ़ते जा रहे हैं।

‘हेल्पएज इंडिया’ नामक एनजीओ द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में लगभग 47 प्रतिशत वृद्धजन अपने परिवारों पर आर्थिक रूप से निर्भर हैं। यहां ध्यान देने वाली बात है कि उन बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार अधिक होता है, जो आर्थिक रूप से अपनी संतानों पर निर्भर होते हैं।

बच्चों की खुशी एवं उनका जीवन संवारने के लिए माता-पिता अपनी सभी इच्छाओं का त्याग कर देते है, अपना सबकुछ न्यूछावर करने को तैयार रहते हैं। अधिकतर मामलों में देखा गया है कि बुजुर्ग भावनावश अपने जीते जी अपनी सारी संपत्ति संतानों के नाम कर देते हैं ; और फिर वहीं बुजुर्ग अपने ही बच्चों के लिए ‘बोझ’ बन जाते हैं।

बुजुर्गों के लिए गरिमापूर्ण जीवन को सुनिश्चित करने के लिए भारतीय कानून में कई तरह के प्रावधान हैं। जिनमें से एक MWPSC एक्ट-2007 है। इस कानून की खास बात ये है कि अगर बुजुर्ग अपनी संपत्ति बच्चों या रिश्तेदार के नाम

संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार साल 2022 में भारत में बुजुर्गों की संख्या 14.9 करोड़ थी। 2050 तक यह संख्या 34.7 करोड़, यानी दोगुने से भी अधिक होने का अनुमान है। जिस रफ्तार से बुजुर्गों की आबादी बढ़ रही है, उसी रफ्तार से उनके प्रति उपेक्षा एवं बदसलूकी के मामले भी बढ़ते जा रहे हैं। ‘हेल्पएज इंडिया’ नामक एनजीओ द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में लगभग 47 प्रतिशत वृद्धजन अपने परिवारों पर आर्थिक रूप से निर्भर हैं। यहां ध्यान देने वाली बात है कि उन बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार अधिक होता है, जो आर्थिक रूप से अपनी संतानों पर निर्भर होते हैं।



हस्तांतरित कर चुके हों और वे अब उनकी देखभाल नहीं कर रहे, तो संपत्ति का हस्तांतरण रद्द हो सकता है। यानी वह संपत्ति फिर से बुजुर्ग के नाम हो जाएगी। इसके अलावा, वैसे बुजुर्ग जो अपनी देखभाल करने में सक्षम नहीं हैं और उनके बच्चे उनका ध्यान नहीं रखते हैं, तो वे भरण-पोषण का दावा कर सकते हैं। उन्हें हर महीने 10 हजार रुपये तक का गुजारा-भत्ता मिल सकता है। साथ ही, भरण-पोषण के आदेश का पालन एक महीने के भीतर करना अनिवार्य है।

साल 2019 में इस एक्ट में कुछ संशोधन किए गए। इस संशोधन के तहत भरण-पोषण राशि की अधिकतम सीमा हटा दी गई है। अब भरण पोषण की राशि बच्चों के वयस्क होने के आधार पर तय की जाएगी। साथ ही तय की गई राशि आदेश के 15 दिनों के भीतर देय होगी।

हालांकि, जानकारी के अभाव एवं लोक-लाज की वजह से ज्यादातर पीड़ित बुजुर्ग अपने बच्चों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने से हिचकते हैं।

बुजुर्गों की गिरती स्थिति सामाजिक के साथ-साथ पारिवारिक एवं भावनात्मक मुद्दा अधिक है,

अतः इसका हल केवल कानूनी प्रावधानों या सरकारी प्रयासों के आधार पर नहीं किया जा सकता है ! इसके लिए परिवार के सदस्यों को चाहिए कि वे बुजुर्गों के प्रति संवेदनशील एवं प्रेमपूर्ण व्यवहार रखें।

अपने बुजुर्गों के साथ तालमेल बिठा पाने में नाकाम युवा अक्सर ‘जेनरेशन गैप’ का हवाला देते हैं। ‘जेनरेशन गैप’ की बात करने वाले आज के युवा यह भूल जाते हैं कि यही ‘गैप’ तब भी होगा, जब वे बूढ़े होंगे। अकेलापन झेल रहे बुजुर्ग और बढ़ते ‘ओल्ड एज होम्स’ बुजुर्गों के आज के साथ-साथ युवाओं के आने वाले कल की तरफ भी इशारा कर रहे हैं।ये सच है कि आज की दौड़ती-भागती जिंदगी में हर ईसान वक्त की कमी से जूझ रहा है। लेकिन यह भी सच है कि तमाम व्यस्तताओं के बीच घर के बुजुर्गों के लिए थोड़ा-सा वक्त तो निकाला ही जा सकता है !

बुजुर्गों को हमसे ज्यादा कुछ नहीं चाहिए ! उन्हें चाहिए तो बस थोड़ा-सा सम्मान, थोड़ी-सी देखभाल, थोड़ा-सा अपनापन, थोड़ी-सी हमदर्दी, थोड़ा-सा प्यार।

लघुकथा ख़तरनाक नहीं होती सासु मां

सुरीली के पास बैठी दूर के रिश्ते की ननद बोली, ‘तुम्हारी सास के तेजपन के चर्चे दूर-दूर तक है, थोड़ा सम्भल कर ही रहना!’ सुरीली ने जब यह सुना तो सोचने लगी सास तो होती ही है थोड़ी तेज, कोई बात नहीं, मेरी माँ भी तो मुझे डांटती थी,वह सुन चुप-चाप बैठी रही। मुंह दिखाई रस्म शुरू हुई, सभी बोली बड़ी सुंदर है दुल्हन तो ! कई देवरानी जेठानी मुंह देखते हुए बोली थोड़ा सावधान रहना, मन मजबूत कर लेना बड़ी ही खतरनाक है सासु मां ! वह अब डरने लगी, माँ ने कैसे घर में शादी कर दी, पता नहीं कैसे जिंदगी चलेगी? मन ही मन सोचने लगी। रात भर उसे तनाव बना रहा। पहली रात को पति से भी कैसे बोलू? पति क्या सोचेंगे?, माँ दो साल और रुक जाती तो क्या हो जाता? कम से कम मेरा पीजी तो पूरा हो जाता, और कल आखरी तारीख है, एडमिशन की ! कैसे बोलू? इसी तनाव में उसे रात भर नींद नहीं

आई। सुरीली सबसे पहले उठ नहा धोकर पूजा पाठ कर चाय बनाने लगी, तभी सासु माँ बोली, अरे ! सुरीली इतनी जल्दी उठ गई, थोड़ा और आराम कर लेती ! नहीं माँजी, जल्दी उठ जाती हूँ मैं ! सुबह के नाश्ते के बाद सुरीली दोपहर के खाने की तैयारी करने लगी, तभी सासु माँ बोली, सुरीली तैयार हो जा ! क्यों माँजी? चल चलना है अभी ! अभी रोटी तो बना लू !नहीं, पहले जल्दी से सूटी पहन कर आ ! फिर देखेंगे रोटी का काम ! सुरीली तुरंत सूट पहन कर बाहर आई, सासुमाँ स्कूटर लेकर खड़ी थी, सुरीली को बैठाया और चल दी, सुरीली को कुछ समझ नहीं आ रहा था। माँ जी कहाँ ले जा रही है.? एक बड़े से होम्पोपेथी कॉलेज के सामने गाड़ी रोक दी। जल्दी से अंदर प्रिंसिपल रूम में सासुमाँ बोली इसका एडमिशन कराना है, पीजी सेकेंडियर में ! सुरीली सासु मां का मुंह देखते रह गई !

(लघुकथा)

प्रभुनाथ शुक्ल

(बरिह पत्रकार, लेखक एवं समीक्षक)



बाबूजी की चिंता आखिर सच साबित हुई अम्मा जी उनका साथ छोड़ गई थीं। वह कैन्सर की बीमारी से हार गई। बाबूजी की लाख कोशिश उन्हें नहीं बचा पाई। बाबूजी का जीवन अंतिम पड़ाव पर अकेला रह गया था। उनकी हालत जैसे रेगिस्तान में करील के पेड़ जैसे हो गई थी। कहने को उनके पास सच कुछ था लेकिन कुछ नहीं था।

अम्मा की तेरहवीं संस्कार के बाद सभी चारों बेटे अपने-अपने कार्यस्थल लौट गए थे। बड़ा बेटा अमेरिका, दूसरा दुबई और तीसरा सिंगापुर में शटल था जबकी चौथा मुंबई में था। जाते वक्त सभी बाबूजी के गले मिलकर खूब घड़ियाली ऑसू रोए थे। सबने बाबूजी को दिलाशा दिया था कोई दिक्कत होगी तो बाबूजी बताइएगा। अब बाबूजी के पास इससे बड़ी क्या दिक्कत होगी। लेकिन किसी ने बाबूजी से यह नहीं कहा था कि आप हम लोगों के साथ चलिए, यहाँ आप अम्मा के बगैर नहीं रह सकते हैं। लेकिन बेटों के लाख चाहने के बाद भी उनकी पत्नियां बाबूजी को साथ रखने को राजी नहीं थीं। क्योंकि उनके स्वतंत्र जीवन में बाबूजी सबसे बड़ी बाधा बनते।

चारों बेटों और बहुओं के जाने के बाद बेटी आज बेटी रेनू को लेने उसके पति आए थे। वह बाबूजी को इस हालत में छोड़कर नहीं जाना चाहती थी, लेकिन ससुराल जाना उसकी भी मजबूरी थी। क्योंकि ससुराल में वह अकेली थीं और उसके पास -ससुर बूढ़े थे। जाते वक्त रेनू बाबूजी को लिपट कर फुट पड़ी थीं। रेनू को सबसे बड़ा दुःख यह था की बाबूजी आज अकेले रह गए हैं। अम्मा की सेवा में उन्होंने खुद का जीवन समर्पित कर दिया था। बाबूजी ने कभी अम्मा की कोई बात नहीं टाली। जीवन के अंतिम छड़ में मरते वक्त अम्मा ने बाबू का हाथ अपने हाथों में लेते हुए कहा था।

भागवान मुझे कुछ मत देना लेकिन हर जन्म में मुझे आपका

खिलौना

अविनाश अग्निहोत्री

अपने बचचे के जन्मदिन पर बस्ती के गरीब बच्चों में खाने के पैकेट और महंगे खिलौने बच्चों में देते रवि और उसकी बचचे के चेहरे तो खिले थे।पर बस्ती के बच्चों में इतने कीमती खिलौनों को लेने में भी कोई खास उत्साह नही था।

रवि ने सामान देते हुए बच्चों से जब इसका कारण पूछा।तब बच्चे तो कुछ नही बोले पर वहीं खड़े एक बुजुर्ग ने गंभीर स्वर में कहा।बाबूजी ये बस्ती के गरीब मेहनती बच्चे है।

घर का चूल्हा जलाने के लिए ये खुद दिनभर अपने मां बाप के साथ तकदीर के हाथों खिलौना बन मेहनत करते है।

फिर इन कीमती खिलौनों से भला इनका क्या वास्ता।



बच्चों की बाबूजी छत्री हुआ करते थे। उन्हें हर मुशीबत धूप, छिंव और बारिश से बचाया था आज उनकी छत्री बनने को कोई तैयार नहीं था।

बिटिया रेनू को विदा करते समय बाबूजी की आँखें छल-छला आई थीं। जिस उमर में ईसान को सबसे अधिक परिवार की जरूरत होती है उस स्थिति में बाबूजी अकेले हो गए। अम्मा ने तो उनका साथ हमेशा के लिए छोड़ा ही था चारों बेटे और बेटी ने भी छोड़ दिया। रेनू की गाड़ी आगे बढ़ रही थीं और बाबूजी की आँखों से आँसू गिर रहे थे। फिर भी वह हाथ उठाकर कह रहे थे आजो खुश रहो। तुम चिंता मत करना। जीवन के अंतिम पड़ाव पर उन्हें बार-बार यह गीत याद आ रहा था... चल अकेला, चल अकेला, चल अकेला, राहीं पीछे छूटा तेरा मेला चल...।



जमाने से आगे



“बुद्ध हो या। जमाने के साथ चलना सीखो वर्ना बहुत पीछे चले जाओगे।”

स्वामी, सुबह सवें मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटेर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

‘सुबह सवेरे’ में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सम्मत होना आवश्यक नहीं है।

विश्व स्वास्थ्य दिवस विशेष

मुकेश कुमार शर्मा

(लेखक पापुलेशन सर्विसेज इंटरनेशनल इंडिया के एक्जिक्यूटिव डायरेक्टर हैं)



राष्ट्र की उन्नति के लिए हर किसी का पूर्ण रूप से स्वस्थ एवं खुशहाल होना बहुत जरूरी है, क्योंकि स्वस्थ नागरिकों से ही समृद्ध राष्ट्र की कल्पना की जा सकती है। यही कारण है कि स्वस्थ स्वास्थ्य व्यवहार अपनाने के प्रति जागरूकता के लिए ही हर साल विश्व स्वास्थ्य संगठन के स्थापना दिवस यानि सात अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है। इसका मूल मकसद लोगों को स्वस्थ जीवनयापन के लिए जरूरी परामर्श प्रदान करने के साथ ही बेहतर स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाना है। हर साल अलग-अलग थीम पर मनाये जाने वाले विश्व स्वास्थ्य दिवस की इस बार की थीम है- ‘मेरा स्वास्थ्य, मेरा अधिकार’। इसके माध्यम से इस वर्ष यह सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है कि हर किसी को, हर जगह, स्वस्थ जीवन जीने का अवसर अवश्य मिले।

शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने के साथ ही मानसिक रूप से भी पूर्ण स्वस्थ होना हम सभी के लिए बहुत जरूरी है। इसके लिए यह भी आवश्यक है कि सही पोषण के साथ ही ध्यान, योग और प्राणायाम को भी जीवन में जरूर शामिल किया जाए। आज शारीरिक श्रम से नाता तोड़ने का ही परिणाम है कि तरह-तरह की बीमारियाँ मानव शरीर पर कब्ज़ा जमाती जा रही हैं। चिकित्सकों की भी यही सलाह रहती है कि गैर संचारी रोगों से बचना है तो रोजाना कम से कम 45 मिनट तक कड़ी मेहनत व शारीरिक श्रम जरूर करें। इससे तेजी से पैर पसार रहे हृदय रोग और डायबिटीज से सुरक्षित रह सकते हैं। इसके अलावा बीड़ी-सिगरेट व

अन्य तम्बाकू उत्पादों और शराब से दूरी बनाने में ही सभी की भलाई है क्योंकि कैंसर समेत कई गंभीर बीमारियां इन्हीं से पैदा होती हैं। गैर संचारी रोगों के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए ही घर के करीब में आयुष्मान भारत आरोग्य मंदिर (हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर) स्थापित किये गए हैं। इन केन्द्रों पर इन बीमारियों की स्क्रीनिंग, जांच और परामर्श के लिए कम्प्युनिटी हेल्थ आफिसर (सीएचओ) की तैनाती की गयी है। इसलिए जब भी कुछ असहज महसूस करें तो अप्रशिक्षित चिकित्सकों के पास जाने के बजाय बेहिकक सीएचओ की मदद लें, जो सही मायने में आपके सच्चे मददगार साबित होंगे।

अपने ही देश नहीं बल्कि विदेशों में भी आज की भागदौड़ भरी जिन्दगी और बदलती जीवन शैली ने सबसे अधिक युवा पीढ़ी को प्रभावित किया है। जीवन में जल्दी से जल्दी सब कुछ हासिल कर लेने की चाह ने जहाँ युवाओं के सुकून को छीना है वहीं उनके पास न तो सही वक्त पर खाना खाने का समय है और न ही सोने का। यही कारण है कि फ़ास्ट फ़ूड



और दिखावे के लिए शराब और सिगरेट का सहारा लेने वाले युवाओं में हृदय रोग, डायबिटीज, कैंसर और हाइपरटेंशन जैसे गंभीर गैर संचारी रोग अब 30 साल की उम्र में ही शरीर पर कब्ज़ा जमाने लगे हैं।

स्वस्थ जीवन के लिए जरूरी है कि भोजन संतुलित

मात्र में ही करें और उसमें फल और हरी सब्जियों को जरूर शामिल करें। शरीर को चुस्त-दुरुस्त रखने के लिए नियमित रूप से व्यायाम करें। इसके अलावा तनाव से दूर रहें और कभी भी कोई परेशानी महसूस हो तो परिवार वालों से जरूर साझा करें। प्रतिदिन कम

से कम छह से सात घंटे की नींद लें और आराम करें। यह भी ध्यान रहे कि शारीरिक वजन बढ़ने (मोटापा) से भी कई बीमारियाँ घेर लेती हैं, इसलिए वजन नियंत्रित रखें। खानपान में इस बात का जरूर ध्यान रहे कि नमक और चीनी का कम से कम इस्तेमाल करें। इसके अलावा अधिक तैलीय खाद्य पदार्थों के सेवन से परहेज करें।

जलवायु परिवर्तन के साथ ही बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण भी सेहत के लिए कई दिक्कतें पैदा कर रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों के अनुसार हर साल विश्व में एक करोड़ से अधिक लोगों की जान पर्यावरणीय कारणों से चली जाती है जबकि यह ऐसे कारण हैं जिनसे सतर्कता बरतते हुए बचा जा सकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए ही संयुक्त राष्ट्र महासभा ने एक प्रस्ताव भी पारित किया है, जिसके अनुसार- स्वच्छ, स्वस्थ और शुद्ध पर्यावरण हर एक मनुष्य का सार्वभौमिक अधिकार होना चाहिए। पृथ्वी पर हमें अच्छे स्वास्थ्य के लिए स्वच्छ हवा, पानी और भोजन की जरूरत होती है। आंकड़े बताते हैं कि 90 प्रतिशत से अधिक लोग दूषित हवा में सांस लेते हैं। केवल वायु प्रदूषण से विश्व भर में प्रति वर्ष लाखों लोगों की मौत हो जाती है। इस सभी के प्रति भी हम सभी सचेत नहीं हुए तो आने वाला समय और कष्टकारी साबित हो सकता है।

विश्व स्वास्थ्य दिवस के मौके पर आज आइये प्रण करें- ‘आओ अपनाई स्वस्थ स्वास्थ्य व्यवहार, मेरा स्वास्थ्य-मेरा अधिकार’।

विश्व स्वास्थ्य दिवस पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।



मा विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के बैनर तले प्रतिवर्ष 7 अप्रैल को एक खास थीम के साथ ‘विश्व स्वास्थ्य दिवस’ मनाया जाता है। इस दिवस को मनाए जाने का प्रमुख उद्देश्य स्वास्थ्य को लेकर विश्व में प्रत्येक व्यक्ति को बीमारियों के प्रति जागरूक करना, लोगों के स्वास्थ्य स्तर को सुधारना और हर व्यक्ति को इलाज की अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना ही है। पूरी दुनिया इस साल ‘मेरा स्वास्थ्य, मेरा अधिकार’ विषय के साथ 74वां विश्व स्वास्थ्य दिवस मना रही है। यदि पिछले कुछ वर्षों की स्वास्थ्य दिवस की थीम पर नजर डालें तो 2023 का विषय था ‘सभी के लिए स्वास्थ्य’, 2022 में यह दिवस ‘हमारा ग्रह, हमारा स्वास्थ्य’, 2021 में ‘सभी के लिए एक निष्पक्ष, स्वस्थ दुनिया का निर्माण’, 2020 में ‘नर्सों और दाईयों का समर्थन करें’ तथा 2019 में ‘सार्वभौमिक स्वास्थ्य- हर कोई, हर जगह’ विषय के साथ मनाया गया था।

‘विश्व स्वास्थ्य दिवस’ मनाए जाने की शुरुआत डब्ल्यूएचओ द्वारा 7 अप्रैल 1950 को की गई थी और यह दिवस मनाने के लिए इसी तारीख का निर्धारण डब्ल्यूएचओ की संस्थापना वर्षगांठ को चिन्हित करने के उद्देश्य से ही किया गया था। डब्ल्यूएचओ की स्थापना के साथ ही 1948 में विश्व स्वास्थ्य दिवस की नींव भी रख दी गई थी। दरअसल उस समय लोगों की सेहत को बढ़ावा देने और उन्हें गंभीर बीमारियों से सुरक्षित रखने के उद्देश्य से दुनिया के कई देशों ने मिलकर दुनियाभर में ठोस कार्य करने की जरूरत पर बल दिया और आखिरकार विश्व स्वास्थ्य दिवस की नींव रखने के दो वर्ष बाद सन् 1950 में पहली बार 7 अप्रैल को यह दिवस मनाया गया। संयुक्त राष्ट्र का अहम हिस्सा ‘डब्ल्यूएचओ’ दुनिया के तमाम देशों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं पर आपसी सहयोग और मानक विकसित करने

पहला सुख निरोगी काया



वाली संस्था है, जिसका प्रमुख कार्य विश्वभर में स्वास्थ्य समस्याओं पर नजर रखना और उन्हें सुलझाने में सहयोग करना है। इस संस्था के माध्यम से प्रयास किया जाता है कि दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहे।

हालांकि चिंता की स्थिति यह है कि पिछले कुछ दशकों में एक ओर जहां स्वास्थ्य क्षेत्र ने काफी प्रगति की है, वहीं कुछ वर्षों के भीतर एड्स, कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियों के प्रकोप के साथ हृदय रोग, मधुमेह, क्षय रोग, मोटापा, तनाव जैसी स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी तेजी से बढ़ी हैं। ऐसे में स्वास्थ्य क्षेत्र की चुनौतियां निरन्तर बढ़ रही हैं। वैसे तो दुनिया के तमाम देश बीते कुछ दशकों से स्वास्थ्य के क्षेत्र में लगातार प्रगति कर रहे हैं लेकिन कोरोना काल के दौरान जब अमेरिका जैसे विकसित देश को भी बेबस अवस्था में देखा गया और वहां भी स्वास्थ्य

कर्मियों के लिए जरूरी सामान की भारी कमी नजर आई, तब पूरी दुनिया को अहसास हुआ कि अभी भी जन-जन तक स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंचाने के लिए बहुत कुछ किया जाना बाकी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन स्वयं मानता है कि दुनिया की कम से कम आधी आबादी को आज भी आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध नहीं हैं। विश्वभर में अरबों लोगों को स्वास्थ्य देखभाल हासिल नहीं होती। करोड़ों लोग ऐसे हैं, जिन्हें रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताओं तथा स्वास्थ्य देखभाल में से किसी एक को चुनने पर विवश होना पड़ता है।

भारतीय समाज में तो सदियों से धारणा रही है ‘पहला सुख निरोगी काया, दूजा सुख घर में हो माया’ लेकिन चिंता का विषय यही है कि हमारे यहां भी स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति बहुत खराब है। बहरहाल, विश्व स्वास्थ्य दिवस के माध्यम से जहां समाज को बीमारियों के प्रति जागरूक करने

का प्रयास किया जाता है, वहीं इसका सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु यही होता है कि लोगों को स्वस्थ वातावरण बनाकर स्वस्थ रहना सिखाया जा सके। दरअसल विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से पूर्ण स्वस्थ होना ही मानव-स्वास्थ्य की परिभाषा है। यह बेहद चिंता का विषय है कि दुनिया की करीब 30 प्रतिशत आबादी के पास बुनियादी स्वास्थ्य उपचार तक पहुंच नहीं है और करीब 200 करोड़ लोग विनाशकारी अथवा खराब स्वास्थ्य देखभाल लागत का सामना कर रहे हैं, जिसमें काफी असमानताएं हैं, जो सबसे वंचित परिस्थितियों में लोगों को प्रभावित कर रही हैं। हालांकि स्वास्थ्य का अधिकार एक ऐसा मौलिक मानवाधिकार है, जिसके तहत प्रत्येक व्यक्ति को बगैर किसी वित्तीय बोझ के, जब भी जरूरत हो, स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच मिलनी चाहिए।

मन का फेर: कुरीतियों पर प्रहार

समीक्षा

मनोरमा पंत

समीक्षक



अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकों के संपादक-लेखक सुरेश सौरभ, नवीन लघुकथा का साझा संग्रह ‘मन का फेर’ लेकर पाठकों के बीच उपस्थित हुए हैं, अंधविश्वासों, रूढ़ियों एवं कुरीतियों पर केंद्रित यह साझा लघुकथा संग्रह अपने आप में बेहद अनूठ है। जिसमें उनकी संपादन कला निखर कर आई है। बलराम अग्रवाल, योगराज प्रभाकर जैसे प्रमुख लघुकथाकारों ने एक स्वर में कहा है कि लघुकथा का मुख्य उद्देश्य समाज की विसंगतियों को सामने लाना है। इस उद्देश्य में सुरेश सौरभ का नवीनतम लघुकथा-संग्रह ‘मन का फेर’ खरा उतरा है। यह एक विडम्बना ही है कि विकसित देशों के समूह में शामिल होने में अग्रसर भारत का एक बहुत बड़ा वर्ग आज भी धर्म और परम्परा के नाम पर ढोंगी महात्माओं और कथित मौलवियों के जाल में फँसा हुआ है। अभी भी स्त्री को डायन करार कर प्रताड़ित किया जाता है, पिछड़े इलाकों में बीमारा व्यक्ति को, चाहे वह दो महीने का बच्चा ही क्यों न हो, नीम हकीम के द्वारा लोहे के छल्लों से दगा जाता है। ऐसे समाज को जागरूक करने का बोझ उठाने में यह लघुकथा-संग्रह सक्षम है।

सुरेश सहानी, मीरा जैन, डॉ. पून सिंह, कल्पना भट्ट, डॉ. अंजू दुआ जैमिनी, गुलजार हुसैन, चित्तरंजन गोप ‘लुकाटो’, डॉ. चंद्रेश कुमार छलत्तानी, रमाकान्त चौधरी, अखिलेश कुमार ‘अरुण’, डॉ. राजेंद्र साहिल, डॉ. मिथिलेश दीक्षित, रश्मि लहर, विनोद शर्मा, सहित 60 लघुकथाकारों से सुसज्जित, 144 पृष्ठों संग्रह में, आडम्बरों को, रूढ़ियों को बेधती मार्मिक लघुकथाएँ सहज, सरल, भाषा शैली में, पाठकों को आकर्षित करने में सफल है। हाल ही में इस संग्रह का विमोचन स्वच्छकार समाज और समाज सेवियों ने किया। सौरभ जी का प्रयास है कि समाज में अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक साहित्य पहुँचे। संग्रह की भूमिका प्रसिद्ध पत्रकार लेखक अजय बोकिल ने लिखी है। संग्रह की लघुकथाएँ शोधपरक एवं पठनीय हैं।

पुस्तक- मन का फेर (साझा लघुकथा संग्रह)
प्रकाशन- श्रुत वर्णा प्रकाशन नोयडा
संपादक- सुरेश सौरभ
मूल्य- 260

क्या -‘द ग्रेट इंडियन कपिल शो’ सप्ताहान्त धमाका बन पायेगा ?



तेब समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

वीक एण्ड यानी सप्ताहान्त की परम्परा पाश्चात्य देशों से भारत आई है जहाँ सप्ताह में कार्यकारी दिनों की संख्या सोमवार से शुरूवार तक पाँच दिन होती थी और शनिवार -रविवार सप्ताहान्त की छुट्टियाँ होती थीं। शनिवार की रात कामकाज आबादी पूरे सप्ताह के कामकाज की थकान मिटाने के लिए कुछ खुशनुमा पल परिवार के साथ बिताना चाहती है। भारत के एक लोकप्रिय कॉमेडी शो के प्रस्तुतकर्ता कपिल शर्मा जो अब तक सोनी टीवी चैनल पर ‘कपिल शर्मा कॉमेडी शो’ के कारण चर्चित थे उन्होंने इन्हीं वीक एण्ड व्यूअर्स के लिये गत शनिवार से एक सौ बानवे देशों में - ‘ द ग्रेट इंडियन कपिल शो’ का प्रसारण आरम्भ किया है।

नेटफ्लिक्स की इस वेबसिरीज के बारे में कपिल कह रहे हैं कि यह शो उन्होंने पूरे परिवार कपिल शोके एक साथ बैठकर देखने के लिए बनाया है। मोबाइल पर एक सी नयिन्याने वाले प्लान में तो कोई घरवालों के साथ बैठकर इसे देखने से रहा, ऊपर से नेटफ्लिक्स खुद कह रहा है कि तेरह साल से कम उम्र वाले लोग इसे न देखें तो फिर यह कैसे एक पारिवारिक शो है , कपिल शर्मा ही बता सकते हैं। बकौल नेटफ्लिक्स यह एक नया वीक एण्ड धमाका है। अब समय ही बतायेगा कि इस दावे में कितना दम है ?

नेटफ्लिक्स की इस नई सीरीज के पहले एपीसोड में एलजीबीटीक्यू समुदाय के प्रति अपना समर्थन जताने के लिए नव्या सिंह पूरा समय बस अर्चना पून सिंह की बाईं ओर बैठकर मुस्कुराती रहीं। स्क्रिप्ट लिखने



वाले ने उनके लिए एक पॉक लिखना तक पसन्द नहीं किया। हमेशा की तरह शो में कपिल की पत्नी गिनी और उनकी भाभी हैं और माँ का आशीर्वाद तो कपिल को हर एपीसोड में लगता ही है। लेकिन, टेलीविजन से ओटीटी पर धमाकेदार इन्ट्री वाले इस शो का असल आकर्षण सुनील ग्रोवर की वापसी है। कपिल और सुनील, जो इस बार डफली बनकर आ रहे हैं, के बीच ऑस्ट्रेलिया ट्रिप की यादें ताजा हूँ। सुनील ने अपने झगड़े के दूसरे सीजन की डिमण्ड के बारे में भी बताया लेकिन उसके बाद जो कुछ इस पात्र और रणबीर के बीच इस शो में हुआ, उसकी स्क्रिप्टिंग बेहद कमजोर कर है और बकौल एक समीक्षक इससे बढ़िया स्क्रिप्ट तो इन दिनों गाँवों की मॉडर्न नैटकियों की होने लगी है। पटकथा

ऐसे किसी भी शो का प्राण तत्व माना जाता है अतः इसमें कोताही नहीं होनी चाहिए मगर इस बात को कोई माने तब ना ?

द ग्रेट इंडियन कपिल शो का पहला एपीसोड ही सुपरस्टार रणबीर कपूर, अनुभवी अभिनेत्री नीतू कपूर और उनकी बेटी रिद्धिमा कपूर जैसे मेहमानों के साथ शुरू होने के बाद भी स्थायी प्रभाव छोड़ने में विफल रहा। गुदगुदाने वाले हास्य को भूल जाइए, अभी तक तो इस शो के एपीसोड्स दर्शकों के चेहरे पर मुस्कराहट तक नहीं ला पा रहे हैं।

कपिल शर्मा अपने वही पुराने चुटकुले जारी रखते हैं - सामान्य ‘पति-पत्नी’ हास्य, सितारों से ‘मध्यम वर्ग’ के सवाल पूछना, कीकू शारदा के चरित्र को शर्मसार करना और अर्चना पून सिंह को ट्रोल्

करना। सुनील ग्रोवर एक बार फिर क्रॉस-ड्रेस करते हैं, जिससे दर्शकों को उनके प्रतिष्ठित चरित्र ‘गुत्थी’ (इस बार वो में उनका नाम डफली है) की याद आती है, और शो में उनके पिछले कृत्यों के साथ समानता के बावजूद, वह, और केवल ‘ वह ’, बनाने में कामयाब होते हैं। यही ‘ वह ’ जब अपनी शमीली हरकतों में शामिल होता है तो आप हंसेते हैं।ऐसा लगता है कि कपिल और रचनात्मक टीम ने नए हवाई अड्डे के सेट-अप - ‘कप्स कैफे’ - के लिए वास्तव में कड़ी मेहनत की है, लेकिन मेरी इच्छा है कि उन्होंने हास्य का पुनर्मूल्यांकन करने और कुछ नया लाने के लिए हर दिन कुछ घण्टे निकालने चाहिये।

यह लगभग छः साल पहले का प्रसंग है ऑस्ट्रेलिया से लौटते वक्त कपिल शर्मा और सुनील ग्रोवर के बीच झगड़ा हो गया था, जिसके बाद दोनों ने कई बार एक-दूसरे पर आरोप लगाए, कपिल ने अपनी करतूत के लिए माफी भी मांगी, लेकिन सुनील ने उन्हें माफी देने में छः साल लगा दिए। ‘गुत्थी’ और ‘डॉक्टर मशहूर गुलाटी’ जैसे कॉमिक चरित्र निभाने के बाद अब सुनील का नया अवतार देखने को मिल रहा है। वो डफली बनकर दर्शकों को एंटरटेन कर रहे हैं। इनके अलावा शो में कृष्णा अभिषेक, कीकू शारदा, राजीव ठाकुर भी हैं। जज की कुर्सी पर अर्चना पून सिंह ही हैं।एक विश्लेषण के अनुसार कपिल शर्मा शो के बारे में वो पाँच बातें उसे उम्मीदों के सातवें आसमान से जमीन पर ले आती हैं , उनमें पहली बात तो यह है कि इसके जोक्स पुराने ही है जो कपिल के पुराने टीवी शो का याद दिलाते हैं और लगता है हम अभी भी टीवी शो देख रहे हैं ? दूसरी बात, कपिल और उनका टीम पुराने बिसे-पिटे चुटकुले ही आजमा रही है जो हँसाते कम और चिढ़ाते ज्यादा। हैं। तीसरी बार ओटीटी पर आने से कपिल को दोहरे अर्थ वाले संवाद की मानों छूट मिल गई है। इसकी झलक पहले एपिसोड में ही मिल गई।

चौथी बात सुनील ग्रोवर से बहुत उम्मीदें थी मगर वो डफली बनकर, भी गुत्थी को ही रिपीट करते नजर आये, और पाँचवी और अन्तिम बात पहले टीवी पर कपिल के जोक्स मुफ्त में मौजूद थे, अब ओटीटी पर शुल्क चुकाना होता है। कुल मिलाकर यह वेबसिरीज ऊँची दुकान,फोके पकवान हैं।

प्रशिक्षण कक्ष में तन के साथ जरूरी है कि आप मन से भी उपस्थित रहे- कलेक्टर



बैतूल। निष्पक्ष, शांतिपूर्ण एवं पारदर्शी निर्वाचन प्रक्रिया के दृष्टित जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी ने कहा कि प्रशिक्षण मात्र औपचारिकता नहीं है। निर्वाचन के लिए आपको सोंपा गया दायित्व जितना महत्वपूर्ण है उतना ही संवेदनशील भी है। प्रशिक्षण केंद्र में तन के साथ मन की उपस्थिति भी जरूरी है। श्री सूर्यवंशी गंज क्षेत्र में शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में चल रहे निर्वाचन संबंधी प्रशिक्षण में प्रशिक्षणार्थियों को मोटिवेशनली संबोधित कर रहे थे।

द्वितीय चरण में 26 अप्रैल को बैतूल संसदीय क्षेत्र में मतदान होना है। मतदान के पूर्व की तैयारियों को बारोंकी से देखने और समझने के लिए जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी स्वयं हर स्तर पर चल रहे प्रशिक्षण एवं कार्यक्रमों पर भी सतत नजर बनाए हुए हैं। इसी अनुक्रम में वह गंज क्षेत्र में चल रहे प्रशिक्षण को देखने के लिए प्रशिक्षण स्थल पर पहुंचे। उन्होंने प्रशिक्षण को देखा। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि मुख्य प्रशिक्षक श्री ठाकुर और उनकी टीम के सभी सदस्य निर्वाचन संबंधी नियमों और कार्य प्रणाली में पूरी तरह दक्ष हैं। आपको उनकी योग्यता का लाभ लेना चाहिए। आज के प्रशिक्षण में जहां सात पुरुष प्रशिक्षक उपस्थित है, वहीं सात महिला प्रशिक्षकों ने भी प्रशिक्षण में अपना योगदान दिया है। श्री सूर्यवंशी ने प्रशिक्षण के प्रति संतोष प्रकट किया। उल्लेखनीय है कि मतदान के पूर्व दिवसों ३2 और ३3 के दिन निर्वाचन संबंधी कार्य पद्धति के इस प्रशिक्षण सत्र में 251 में से 244 प्रशिक्षणार्थी उपस्थित थे। 7 कमरों में चल रहे इस प्रशिक्षण के प्रत्येक कक्ष में श्री सूर्यवंशी ने प्रशिक्षण को देखा और मतदान कार्य में लगे कर्मियों को प्रोत्साहित किया।

अंतर्राज्यीय चेक पोस्ट कुकुरु बैरियर पर एसएसटी टीम व पुलिस की संयुक्त टीम ने 10 लाख किए जप्त

एसएसटी टीम एवं पुलिस की संयुक्त कार्यवाही



बैतूल। पुलिस अधीक्षक निश्चल झारिया एवं अति. पुलिस अधीक्षक कमला जोशी तथा एसडीओपी भैसदेही भूपेन्द्र सिंह मौर्य, एसडीएम भैसदेही अनीता पटेल, तहसीलदार के निर्देशन एवं थाना प्रभारी भैसदेही अंजना धुर्वे के नेतृत्व मे थाना भैसदेही क्षेत्रान्तर्गत अतर्गत अन्तर्राज्यीय चेकिंग पाइंट कुकुरु बैरियर पर शनिवार को एसएसटी टीम एवं अन्तर्राज्यीय चेकिंग नाको पर लगे पुलिस बल द्वारा महाराष्ट्र की ओर से आ रही एक मोटरसाइकिल को रोक कर चेकिंग की। चैकिंग के दौरान अगर पिता शंकर गाटे उम्र 38 साल निवासी ग्राम काठकूभ महाराष्ट्र के पास से नगदी कुल 10 लाख रुपए मिले, जिसके संबंध मे कोई वैध दस्तावेज नहीं पाये जाने से विधिवत जप्त किया गया। जो अग्रिम कार्यवाही आयकर विभाग द्वारा की जावेगी। प्रकरण की उक्त कार्यवाही मे थाना प्रभारी भैसदेही अंजना धुर्वे, एसएसटी प्रभारी शिपाल परते कार्यपालिक मजिस्ट्रेट, आकाश, रमेश, जिया किरार, अंकिता शर्मा की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

दो शव मिलने से फैली सनसनी, थाने में दर्ज की थी गुमशुदगी

बैतूल। बैतूलबाजार थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम सेहरा में एक वृद्ध का शव कुएं में पड़ा मिलने से सनसनी फैल गई। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घटना स्थल का जायजा लिया। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक सेहरा निवासी हिवराज लिलोरे (55) का शुक्रवार की सुबह गांव के ही पास एक कुएं में पड़ा मिला। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और ग्रामीणों को मदद से वृद्ध के शव को कुएं के बाहर निकाला। शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया गया। पुलिस के मुताबिक मृतक दो दिन पूर्व से ही घर से लापता था। परिजनों ने वृद्ध की गुमशुदगी की शिकायत बैतूल थाने में दर्ज कराई थी। वृद्ध का शव शुक्रवार सुबह कुएं में पड़ा मिला है। बताया जा रहा है कि वृद्ध की मानसिक हालत ठीक नहीं थी। वृद्ध वहीं भी घूमने के लिए निकल जाता था। हालांकि वह घर से बाहर जाने के बाद समय पर घर वापस भी आ जाता था, लेकिन दो दिन पूर्व वृद्ध घर से निकला और वापस नहीं आया। परिजनों ने तलाश शुरू की। वृद्ध के नहीं मिलने पर परिजनों ने इसकी गुमशुदगी की शिकायत थाने में दर्ज कराई।

बैतूल बाजार नगर पालिका के दो बार अध्यक्ष रहे पं. नरेन्द्र शुक्ला भाजपा में शामिल

बैतूल। जिस बैतूलबाजार को पंडित नरेन्द्र शुक्ला की वजह से कांग्रेस का गढ़ कहा जाता था, आज वही नरेन्द्र शुक्ला अपने हजारों समर्थकों के साथ भाजपा में शामिल हो गए। बैतूल जिले का सबसे प्राचिन गांव एवं नगरीय क्षेत्र बैतूलबाजार में अभी तक नरेन्द्र शुक्ला एवं उनकी जीवन संगिनी ही सबसे अधिक समय तक बैतूलबाजार नगर परिषद के अध्यक्ष चुने गए। शुक्ला परिवार की श्रीमती सरोजनी शिवकुमार शुक्ला बैतूल कृषि उपज मंडी की अध्यक्ष रह चुकी है। शुक्ला परिवार के एक अन्य सदस्य राजेश शुक्ला (पप्पु भैया) बैतूल जनपद के सदस्य चुने गए थे। बैतूल विधानसभा क्षेत्र में शुक्ला परिवार का काफी प्रभाव रहा है। बैतूल बाजार में शुक्ला चौक

सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ मनाई मां कर्मा जयंती, शहर में निकली वाहन रैली

सामाजिक कार्यक्रम में 75 वर्ष पूर्ण किए बुजुर्गों, प्रतिभावान छात्रों का किया सम्मान

बैतूल। मां कर्मा साहू समाज नगर समिति द्वारा मां कर्मा जयंती का भव्य आयोजन बैतूल नगर में हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत कलश यात्रा से हुई, जिसके बाद विभिन्न मार्गों से निकली वाहन रैली में सैकड़ों सामाजिक जनों ने भाग लिया। इसके बाद नागदेव मंदिर सदर में समिति द्वारा वाहन रैली के जलपान की व्यवस्था की गई। उसके बाद, कर्मा मंगल भवन में 75 वर्ष पूर्ण किए बुजुर्गों का सम्मान, प्रतिभावान छात्रों का सम्मान, सांस्कृतिक कार्यक्रम के प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार वितरित किए गए। सभी उपस्थित सामाजिक जनों ने फग उत्सव मना कर हार्दोल्लास से फूलों की होली खेली। भोजन प्रसाद के बाद

कार्यक्रम का समापन किया गया।

मां कर्मा जयंती के अवसर पर काली चट्टान स्थित कर्मा भवन में आयोजित कार्यक्रम में समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों ने उत्साह और उत्सव भावना के साथ भाग लिया। कार्यक्रम में समाज के नेतृत्व व्यक्तियों ने समाज की उन्नति और सामूहिक विकास की बात की। यहां तक कि युवा एवं बच्चों को भी समाज के मूल्यों और संस्कृति के प्रति समर्पित करने के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर समाज के सदस्यों ने एक-दूसरे के साथ सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से जुड़ने का बड़ा संदेश भी दिया। इस विशेष आयोजन में समाज की संस्कृति के महत्व को बढ़ावा दिया गया, जहां

कांग्रेस विधि एवं मानवाधिकार के प्रदेश महासचिव एवं उपाध्यक्ष भाजपा में शामिल

देवास। कांग्रेस विधि एवं मानवाधिकार विभाग के प्रदेश महासचिव एडवोकेट सुरेश चौधरी गुजर एवं उपाध्यक्ष एडवोकेट देव कनासिया ने भाजपा जिलाध्यक्ष राजीव खंडेलवाल के नेतृत्व में भाजपा कार्यालय पर भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। चौधरी एवं कनासिया के भाजपा में शामिल होने पर भाजपा पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं द्वारा पुष्पमाला से उनका स्वागत किया गया।

देवास के मानस चौहान ने बड़े पर्दे पर दिखाया जलवा

बॉलीवुड फिल्म गुडलक में निभाई डॉक्टर की भूमिका एवं किया डांस

देवास। देवास शहर के कलाकार भी फिल्म जगत में अपना नाम कमा रहे हैं। हाल ही में रिलीज हुई एक बॉलीवुड फिल्म जिसका नाम गुडलक है जो सिनेमाघरों में 5 अंकों से दिखाई जा रही है। इस फिल्म में देवास के आर.एस.डी.ए. डांस क्लास के कोरियोग्राफर मानस चौहान ने डॉक्टर की भूमिका निभाते हुए सांग पप्पी चौकड़ा में शानदार डांस भी किया है। इस फिल्म की शूटिंग उज्जैन, इंदौर, मुंबई एवं आसपास की जगहों पर की गई है।

देवास रोलबॉल टीम राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए रवाना

देवास। जिला रोल बॉल एसोसिएशन के सचिव संदीप जाधव ने बताया कि रोलबॉल राज्य स्तरीय प्रतियोगिता 06 से 07 अप्रैल 2024 मेंड्रैफ्ट्स इंटरनेशनल स्कूल, इंदौर में आयोजित होगी। जिसमें भाग लेने के लिए देवास जिले की टीम में जतिन लॉट, सक्षम सिकरवार, हिमांशु शर्मा, वरुण कुशवाह, ध्रुव चौहान, अश्वत राठौर, हर्षित शेन , हरिप्रिया यादव, शीतल चौधरी, एकता सोलंकी हे रेफरी राजवीर ठाकुर, देवराज सांगते, कोंच पवन यादव, मेनेजर शैलेंद्र चंद्रवंशी के साथ रवाना हुए। इस अवसर पर प्रेस क्लब सचिव चेतन राठौड़, उपाध्यक्ष पावन पाटिल, अश्विनी जाधव, अर्पणा यादव सह सचिव पावन पाटिल, किरण राव, खुशबू पाटिल, तन्मय मेहता, सूरज वामनिया, रश्मि ठाकुर, हर्षिता कोशल, विशाल

राष्ट्रीय स्तर पिट्ट (सितोलिया) वर्कशॉप का समापन

देवास। पिट्ट फेडरेशन ऑफ इंडिया के तत्वाधान में पिट्ट एसोसिएशन ऑफ मध्य प्रदेश द्वारा नेशनल रेफरी एवं प्रशिक्षक वर्कशॉप, माहेश्वरी भवन इंदौर में दो दिवसीय वर्कशॉप आयोजित की गई ,जिसमें 12 राज्यों के रेफरी एवं प्रशिक्षकों ने हिस्सा लिया। सेमिनार को पिट्ट फेडरेशन ऑफ इंडिया के टेक्निकल डायरेक्टर कृष्णा गोपाल मिश्रा द्वारा कंडक्ट किया गया। सेमिनार में सभी को पिट्ट खेल में जो नियम है उनसे सभी को अवगत कराया, देवास जिला पिट्ट संघ से सचिव विवेक बंजारे, कोषाध्यक्ष शिव प्रजापत, सदस्य राहुल भिलाला ने

सिंह, रैना कौशल, प्रियांशी कदम, उर्वशी मंडलोई, युवराज सिंह, धर्मेन्द्र सिंह, रितिक मुकाती, त्रुहराज सिंह, सुमित शर्मा, उदय भावसार, निखिल सिंह, साक्षी चौहान, प्रियंका ठाकुर, कुमकुम सोलंकी,

भावना गुर्जर, गोरेश्वरी राठौर, तनिषा पांचाल सुनील मालवी, लखन योगी, आकाश चौहान, रोहित मालवी, गौरव मालवी, आदि ने बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

वर्कशॉप में हिस्सा लिया साथ ही नेशनल रेफरी सेमिनार कालीफाई किया। वर्कशॉप के समापन अवसर पर समाजसेवी ईश्वर बाहेती, पिट्ट फेडरेशन ऑफ इंडिया महासचिव नवीन गौड़ ,कोषाध्यक्ष हरीश चौबे , पिट्ट फेडरेशन ऑफ मध्य प्रदेश सचिव गुलाब सिंह चौहान ,ईश्वर सिंह चौहान ने प्रमाण पत्र वितरित किए।सेमिनार में कालीफाई होने पर देवास जिला पिट्ट संघ के संरक्षक सुदेश सांगते , अध्यक्ष कपिल व्यास, उपाध्यक्ष अभिषेक गोस्वामी, रितु व्यास ने बधाई दी। उक्त जानकारी देवास कोच शिव प्रजापत ने दी।

राधा कृष्ण के चलित उत्कृष्ट नृत्य ने नगरवासियों का मनमोहा

मां कर्मा जयंती पर सभी को बांधी पगड़ी

सुबह सवरे, सोहागपुर।
साहू समाज की आराध्य देवी भक्त शिरोमणि मां कर्मा जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। समीपवर्ती ग्राम सेमरीहरचंद से मां कर्मा जयंती मनाने जाने के समाचार हैं।इस अवसर पर महारानी लक्ष्मीबाई मंच परिसर से मां कर्मा की शोभायात्रा निकाली गई। इसके पूर्व साहू समाज के महिलाओं ,पुरुषों एवं बच्चों को केसरिया पगड़ी के अलावा पट्टिका गले में पहनाई गई। शोभायात्रा में मां कर्मा की प्रतिमा,के अलावा घोड़े पर सवार मातृशक्ति चल रही थी। बैंड बाजों की धुन पर युवक नृत्य करते चल रहे थे। वहीं गाडरवारा की नृत्य राधा कृष्ण को जोड़ी ने पूरे रास्ते हमेशा की तरह जगह-जगह तालियां बटोरें।शोभायात्रा अस्पताल रोड, कन्या शाला, बिहारी चौक, कमनिया गेट, मुख्य बाजार, पलकमती नदी से होकर एक निजी स्कूल में विर्सजित हुई। इसके पूर्व समाज के प्रतिभावान की विभूतियों को सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि साहू समाज ने अपने प्रतिष्ठान मां कर्मा जयंती पर बंद रखे थे। उक्त आयश्य की जानकारी संदीप साहू ने सुबह सवरे संवाददाता को दी।

मित्र फ्रेंड्स कन्या शाला में ‘डोनेट 999 कैपेन’ का शुभारंभ

सुबह सवरे सोहागपुर
ईसाई मिशनरी के तत्वावधान में सन् 1875 से बालिका शिक्षा को समाज सेवा के एकमेव उद्देश्य के स्थापित मित्र (फ्रेंड्स) कन्या शाला में प्रवेशोत्सव एवं ‘डोनेट 999 कैपेन’ का शुभारंभ पूर्व छात्र-पालक प्रतिनिधि अधिवक्ता जय प्रकाश माहेश्वरी, पूर्व अधिवक्ता संघ अध्यक्ष बी. के. शर्मा , सरस्वती शिशु मंदिर के उपाध्यक्ष अभिषेक जैन, पूर्व व्यापारी संघ अध्यक्ष मुकेश मालवीय, जी आर मंडलोई एवं पालकों की गरिमायय उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मित कन्या शाला प्राचार्य डॉ. संजीव शुक्ला ने कैपेन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि मित्र कन्या शाला सोहागपुर में लगभग 150 वर्षों से गरीब, दलित एवं वंचित वर्ग के विद्यार्थियों को ‘गरीब की बेटी - ज्ञान की ज्योति ’ योजना के माध्यम से निशुल्क शिक्षा प्रदान कर रही है । वहीं समाज सेवा के इस पावन अभियान में समाज की सहभागिता बढ़ाने की आशा के साथ संस्था ने इस वर्ष ‘ डोनेट 999 कैपेन’ प्रारंभ की है । इस कैपेन के अंतर्गत शाला परिवार पूर्व छात्र एवं छात्राओं, पालकों, शुभचिंतकों एवं समाज के सम्प्र

वर्ग से संपर्क कर अपील की जाएगी।कि वंचित , दलित वर्ग के विद्यार्थियों की शिक्षा हेतु कम से कम १999 की दान राशि प्रदान करें।जिसका उपयोग विद्यार्थियों को पाठ्य सामग्री, गणवेश प्रदान करने के साथ उनके सुरक्षित परिवहन में किया जाएगा। इसके पूर्व आमन्त्रित अतिथियों एवं नवीन प्रवेशित विद्यार्थियों के स्वागत किया गया।कार्यक्रम समापन के पूर्व समस्त अतिथियों ने शुभकामनाओं के साथ दान स्वरूप सहयोग राशि प्रदान करके कैपेन का शुभारंभ किया। उल्लेखनीय है कि उक्त फ्रेंड्स चर्च कन्या शाला की स्थापना 1875 में फ्रेंड्स सर्विस कार्डसिलिंग लंदन के द्वारा सोहागपुर में स्थापना की गई थी। इस अवसर पर शिक्षिका सुनिता मसीह, गुडिया रघुवंशी, रूपारानी ठाकुर, सोनाली यादव, तनु आरसे , शहनाज खान , कृतिका यादव , अफसाना शाह के साथ नव प्रवेशी विद्यार्थियों के पालक नसीर खान , काशीराम अहिंवार , उमेश आरसे , सलमान खान आदि उपस्थित थे । कार्यक्रम का संचालन संजीव शुक्ला ने किया। आभार शिक्षिका सुनिता मसीह ने व्यक्त किया।

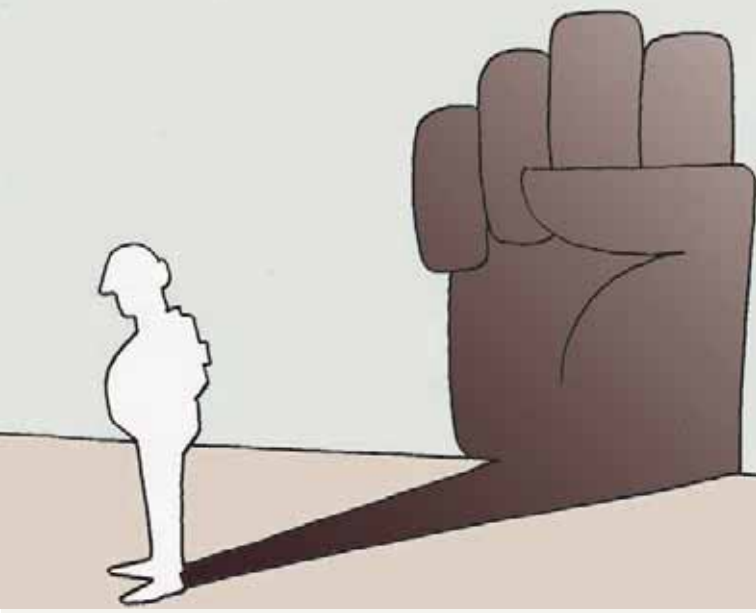
ना बदला है, (क्या) बदलेगा कभी!



प्रकाश पुरोहित

मोहन भिया' बहुत ही अच्छा ट्रंपेट बजाते थे। पढ़े-लिखे नहीं थे, लेकिन इसी 'खूबी' की वजह से उन्हें सिपाही की तरह भर्ती कर लिया गया था। कोई चालीस साल पहले सिपाही में भर्ती होने के लिए ऐसी ही किसी योग्यता की जरूरत होती थी और पुलिस अधीक्षक यदि अर्जी पर दस्तखत कर दें तो नौकरी मिल जाती थी। मोहन भिया को ट्रंपेट से प्यार था और जब भी मौका मिलता रियाज करने लगते और हम बच्चे उनके आसपास बैठ सुनते रहते। सरकारी क्वार्टर की दहलीज के बीचोबीच बैठ, दोनों पैर दरवाजे की चौखट से सटा देते और आंखें बंद कर घंटों बजाया करते थे। जब मालूम हुआ कि यही उनकी नौकरी है तो हमारे मन में भी ऐसा ही बनने का सपना उठाने लगा था। कितनी बढ़िया नौकरी है ना, बस बाजा बजाओ!

वह तो एक दिन जब किसी अधिकारी के बच्चे के साथ उसके बंगले जाने का मौका मिला तो दिल धक् से रह गया, देखा मोहन भिया नौकरों की तरह काम कर रहे हैं। उन्हें 'अर्दली' कहा जा रहा था और उन जैसे आधा दर्जन अर्दली और भी थे उस बंगले में, जो थे तो सिपाही, अपनी किसी खासियत की वजह से, लेकिन पढ़े-लिखे नहीं थे तो उनसे इस तरह बेगार ली जाती थी। अफसरों के ही नहीं, उनके बच्चों के भी जुते पॉलिश करते थे, खाना पकाते थे, कपड़े धोते और इस्त्री करते, और तो और, साहब की पाली हुई गाय या भैंस का दूध ही नहीं



निकालते, चराने जाते... दूध ज्यादा होता तो बेचने भी जाते। हर बात पर झिड़की मिलती और कभी-कभी तो पिटाई भी हो जाती। जूता ठीक से नहीं चमका तो उसी जूते से सबक सिखाते थे साहब।

इनकी ड्यूटी का कोई समय नहीं होता था। जब मंगलवार, शुक्रवार को परेड होती तो मोहन भिया कड़क वर्दी पहनते और पुलिस बैंड का हिस्सा बन जाते। यही नहीं, जब शहर में कोई दंगा या अनहोनी होती और रोलकॉल का सायरन बजता तो दौड़ते हुए वर्दी पहनते और लड़ लेकर पुलिस-वैन में जा बैठते और आंदोलनकारियों के पत्थर खाते, क्योंकि इन्हें ही आगे किया जाता। लौटते में 'प्रसादी' का सबूत सिर या हाथ-पैर पर बंधा अस्पताल का बंडेज होता।

आदिवासी इलाके से आए थे मोहन भिया। उन्हें शहरी समझ नहीं आता था कि कौन-सा काम कैसे करना है। उन्हें तो किसी अफसर ने मुंह से बिगुल बजाते सुन लिया था दौरे में और साथ बैठा लाए थे। मोहन भिया को संगीत की परिभाषा तो नहीं आती थी, मगर कान सुरीले थे, जल्द ही ट्रंपेट बजाने लगे। हर दिन तो बाजा बजाने से रहे और फिर अफसर भी बदलते रहे और उनके मिजाज भी। तो अगले अफसर ने मोहन भिया को घर के काम में जोत दिया, फिर तो यही उनकी नौकरी का पक्का हिस्सा हो गया। यह जरूर था कि उन्हें हर समय खाकी वर्दी ही पहने रहना पड़ती थी, ऐसे ही मैंने उन्हें बर्तन मांजते भी कई बार देखा था। वहां मुझसे बात नहीं करते थे और ना ही इस तरह का कोई संकेत ही देते थे कि हम एक-दूसरे को पहचानते भी हैं।

जब घर से निकलते तो ट्रंपेट हाथ में ले कर निकलते थे। बंगले के पीछे गाय के ओसारे में रख कर पतलून के पायंचे घुटनों तक चढ़ाते और काम में भिड़ जाते। एक रोज उन्होंने कहा था 'घर पर मत बताना किसी को, यहां क्या-क्या काम करता हूं', बस इतना ही। मेरे लिए तो उनका ट्रंपेट बजाना आदर्श था, तो इतना वादा तो निभाना ही था। एक बार साहब की बाईसाहब ने मोहन भिया को अपना ब्लाउज ठीक करवाने के लिए दिया। दर्जी भी तो पुलिस का सिपाही ही था, जो पुलिस की वर्दी रफू करता था, अल्टर करता था और साहब के घरवालों के भी कपड़े ठीक करता था। बाईसाब ने बताया था कि बांह एक इंच कम करनी है। मोहन भिया गलत बोल आए और पोलके का सत्यानाश हो गया, ऐसा बाईसाब का आरोप था। उनकी तनखाह से पैसे भी कटे और साहब के हाथ का एक झापड़ भी खाया। दर्जी इसलिए पिटा कि मोहन तो अर्दली है, जंगली है, आदिवासी है, तुम्हे तो पता था बाईसाब का नाप। मैंने अपने आदर्श को उस रोज यूं अपमानित होते देखा तो ट्रंपेट का मोह ही खत्म हो गया।

एक बार ऐसे ही किसी बात पर साहब ने जब हाथ उठाया तो छोटे कद के मोहन भिया ने उछल कर उनकी गर्दन पर हाथ डाल दिया, इस झटके को साहब झेल नहीं सके और जमीन पर आ गिरे। मोहन भिया उनके ऊपर थे। उनकी आंखें जैसे जल रही थीं और उस दिन वे कुछ भी कर सकते थे कि बाकी अर्दलियों ने पकड़ा और साहब को बचाया, उठाया। मोहन भिया गिरपतार हो गए। जब उन्हें पकड़ कर ले जा रहे थे तब भी उनके हाथ में ट्रंपेट था और वे बजा रहे थे। मानो रण जीत कर सिपाही घर लौट रहा हो। फिर कभी नहीं देखा उनको। सुना जरूर कि सस्पेंड हो गए, सजा मिली और बर्खास्त कर दिए गए। लौट गए फिर अपने आदिवासी फालिये में, जहां से आए थे, लेकिन ऐसा हर अर्दली तो नहीं कर सकता है ना, फिर भी कुछ समय तक मोहन भिया की दहशत रही अफसर-बिरादरी में।

मोहन भिया की याद आज इसलिए आई कि अभी दो दिन पहले ही पुलिस अफसरों के बंगलों पर काम करने वाले अर्दलियों ने इकट्ठे होकर गुहार लगाई है कि हमें सिपाही की तरह भर्ती किया है तो हमसे सिपाही का ही काम लिया जाए, बंगलों में बेगार नहीं ली जाए। सरकार की तरफ से बार-बार खानापूति के लिए यह आदेश निकाला जाता है कि बंगलों पर सिपाहियों को अर्दली नहीं रखा जाए, लेकिन आदेश का पालन करवाने वाले सभी अफसर हैं, इसलिए कौन रोक लगा सकता है। बाईसा'ब के बीच होड़ होती रहती कि 'तेरे बंगले पर, मेरे बंगले से ज्यादा अर्दली कैसे?' अर्दलियों की तादाद से अफसर बीवियों का अहम तुल्य होता है, तो कौन इन्हें सिपाही बनने देगा! पौन सदी की आजादी में कुछ बदलाव देख रहे हैं आप! नेताओं को वहम है, सरकार चला रहे हैं, मगर असल में सरकार तो अफसर ही चलाते हैं, जो आमजन को ठेंगे पर रखते हैं!



और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

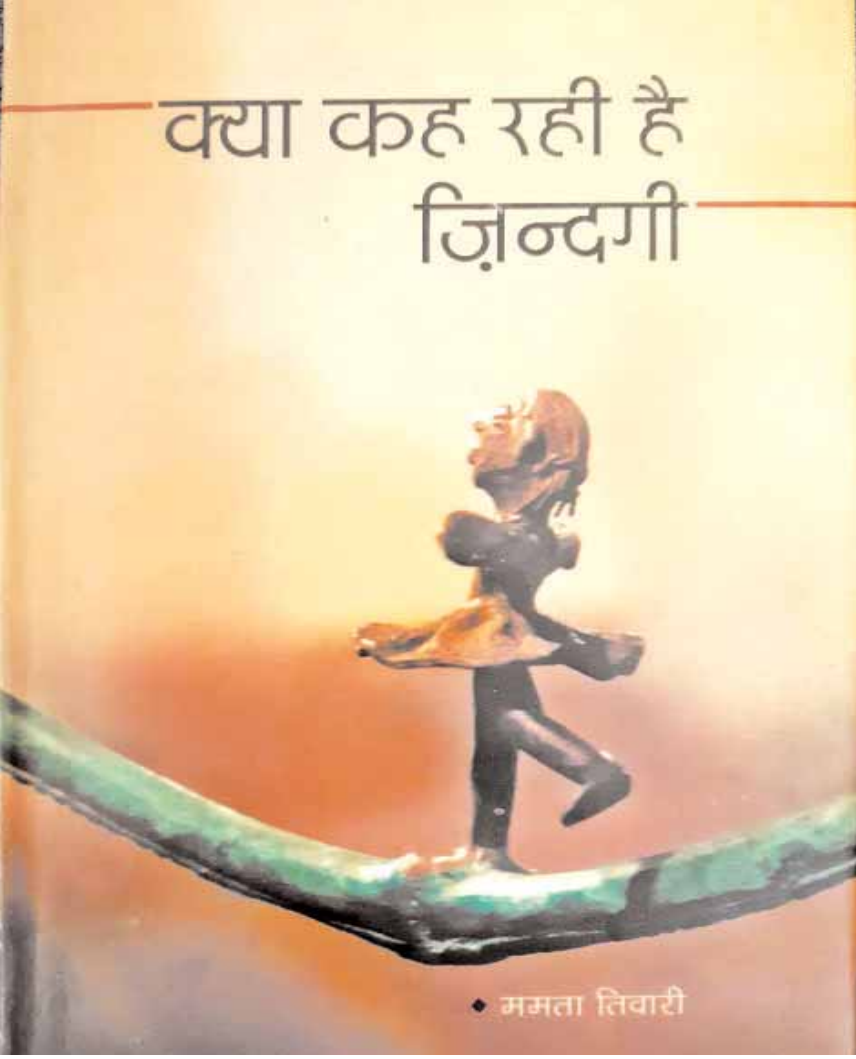
हम स्त्रियों के जीवन में कोई ना कोई ऐसी शारीरिक समस्यायें होती है जिसका हम पर मानसिक प्रभाव पड़ता है। जैसे पीरियड्स होना या नहीं होना, उसके साथ शारीरिक मानसिक बदलाव फिर बच्चा होना, प्रेग्नेसी द्वारा शारीरिक बदलावों को आसानी से देखा जा सकता है पर मानसिक व्यवहार को इग्नोर कर दिया जाता है खैर आजकल की जेनेरेशन 'गूगल' से बहुत कुछ जान लेती है। पर एक ऐसा अदृष्टा विषय है जिसे खास तवज्जोह नहीं दी जाती है उल्टे मजाक ही बनाया जाता है और वो है "मेनोपॉज" (रजोनिवृत्ति)। मैं इस विषय पर क्यों लिख रही हूँ? पुरुष या समाज इसे तकलीफ की श्रेणी में नहीं लेता बल्कि तुम तो अब बूढ़ी हो गई हो कहा जाता है (मानों पुरुष समाज अमृत बूटी पीकर आया है!)।

इस बारे में मैंने अपनी गायनोलॉजिकल डॉक्टर मित्र से बात की। उसने मुझे बताया कि स्त्री के पीरियड्स समाप्त होने की उम्र 45-55 की होती है और उसके बाद मेनोपॉज की उम्र 4 से 5 साल तक चलती है। इस दौरान स्त्री का बहुत ध्यान रखना पड़ता है। आजकल कुछ मेडीकल प्रॉब्लम की वजह से हिस्टेरक्टॉमी (यूटेरस निकालना) भी होती है तब भी मेनोपॉज होता है कोशिश की जाती है ओव्हरी ना निकाली जाये क्योंकि ओव्हरी से ऐस्ट्रोजन हार्मोन निकलता है जो शरीर में हार्ट की गतिविधि, न्यूरोन्स, बोन्स का ख्याल रखता है। बहुधा स्त्रियों को ऐसे समय, खूब गर्म पसीने छूटते है (वो कहते है देखो इन्हें बड़ी गर्मी लगती है)। सच कह रही हूं, स्त्रियों के लिये मेनोपॉज से होने वाले लक्षणों के बारे में खुद पता नहीं होता। मेरी अपनी मददगार दिन प्रतिदिन व्यवहार में बदलती जा रही है चिड़चिड़ी, सरदर्द से परेशान और दुबली होती जा रही है। सोती नहीं है। तब उसने मुझे बताया उसके पीरियड्स बंद हो रहे है। तब मेरी डॉक्टर मित्र ने उसके पति को भी बुलाया और उसके शरीर में होने वाले परिवर्तन से वाकिफ करवाया।

अब मैं पढ़े लिखे समाज को भी बताना चाहती हूं कि बैचैनी, नींद ना आना, मूडस्विंग होना, कभी कभी कहा जाता है ल्यूनर का

दर्द के अनेक पड़ावों से गुजरती स्त्री

मैंने अपनी गायनोलॉजिकल डॉक्टर मित्र से बात की। उसने मुझे बताया कि स्त्री के पीरियड्स समाप्त होने की उम्र 45-55 की होती है और उसके बाद मेनोपॉज की उम्र 4 से 5 साल तक चलती है। इस दौरान स्त्री का बहुत ध्यान रखना पड़ता है। आजकल कुछ मेडीकल प्रॉब्लम की वजह से हिस्टेरक्टॉमी (यूटेरस निकालना) भी होती है तब भी मेनोपॉज होता है कोशिश की जाती है ओव्हरी ना निकाली जाये क्योंकि ओव्हरी से ऐस्ट्रोजन हार्मोन निकलता है जो शरीर में हार्ट की गतिविधि, न्यूरोन्स, बोन्स का ख्याल रखता है। बहुधा स्त्रियों को ऐसे समय, खूब गर्म पसीने छूटते है (वो कहते है देखो इन्हें बड़ी गर्मी लगती है)। सच कह रही हूं, स्त्रियों के लिये मेनोपॉज से होने वाले लक्षणों के बारे में खुद पता नहीं होता। मेरी अपनी मददगार दिन प्रतिदिन व्यवहार में बदलती जा रही है चिड़चिड़ी, सरदर्द से परेशान और दुबली होती जा रही है। सोती नहीं है। तब उसने मुझे बताया उसके पीरियड्स बंद हो रहे है। तब मेरी डॉक्टर मित्र ने उसके पति को भी बुलाया और उसके शरीर में होने वाले परिवर्तन से वाकिफ करवाया।

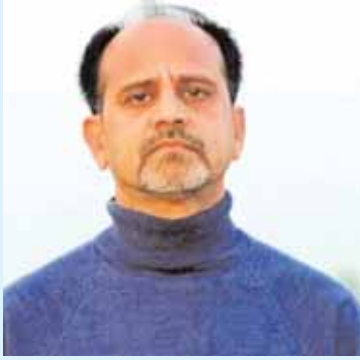


प्रभाव भी होता है। कभी कभी फ्रैक्चर होना, हिडन हार्ट डिजीज, उदासीनता फोकस ना होना पाना। ये ऐसे विषय है जिसमें स्त्री अवसाद में आ जाती है। वो खुद भी नहीं समझ पाती कि ऐसा उसकी जिंदगी में क्यों हो रहा है। किसी को बताओ तो ज्यादातर लोग मजाक बनाते है।

पुरुष समाज को जानना चाहिये आपके जीवन में भी मेनोपॉज होता है जिसका जिन्न मैं अगले आलेख में दूंगी। अभी तो पुरुष समाज, घर के बच्चे पति सब महिला को सहयोग करें क्योंकि इस समय वो कोमल हृदय हो जाती है। छोटी छोटी बातों पे रो पड़ती है। एक्ट्रोजन के उतार चढ़ाव से उसका मूड स्विंग होता है। आप नहीं समझेंगे तो ये 4-5 साल कैसे बितायेगी और स्त्रियां अगर कोई आप पर ध्यान नहीं दे रहा है तो आप को अपना खयाल खुद रखना होगा। अब आप ऐसे काम करें जो आपको एक्टिव बनाये रखें। कोशिश करें राइट की जगह लेफ्ट हैंड से काम करें, सुडोकू खेलें, पजल सॉल्व करें, ब्रेन को मजबूत रखने की जो भी गतिविधियां हो उन्हें करने की कोशिश करें। कैल्शियम ले ताकि आपकी हड्डियां मजबूत रहे।

मन को शांत रखने के लिये ध्यान, संगीत योग, सहेलियों से मिलना, पढ़ना पसंद का काम करें धीरे धीरे समय निकल ही जायेगा क्या निकल जाता है फिर भी अगर परिवार साथ हो तो क्या बात है। क्या खूबसूरत सुबह होगी जब आप देर तक सोई रहें किसी ने आप को नहीं उठाया बल्कि आंख खुलते ही परिवार के किसी सदस्य द्वारा आपको चाय की प्याली मिले ये कहते हुये और क्या कह रही है जिंदगी?

//भाषान्तर//



अनुवाद मणि मोहन

भाषान्तर में आज विख्यात पोलिश कवयित्री अन्ना स्विक् की एक कविता का भावानुवाद।

मैं अपनी देह से बात करती हूँ

ओ मेरी देह , तुम एक पशु हो
जिस पर फबता है
एकाग्रता और अनुशासन का व्यवहार।
एक कोशिश
किसी खिलाडी, कोई संत और एक योगी की।

अच्छी तरह प्रशिक्षित,
तुम मेरे लिए बन सकती हो
एक दरवाजा
जिससे होकर मैं छेड़ दूंगी खुद को
एक दरवाजा
जिससे होकर मैं प्रवेश करूंगी खुद में।
धरती के केंद्र की तरफ झुकी हुई लम्बवत रेखा
बृहस्पति के लिए कोई ब्रह्मांडीय जहाज।

ओ मेरी देह , तुम एक पशु हो
जिसे महत्वाकांक्षा से
कोई परहेज नहीं।
अनन्त संभावनाएं
हमारे लिए खुली हुई हैं।



□ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

इन दिनों सोशल मीडिया पर खाने के वीडियो की बाढ़ है। जिसे देखिए या तो खाना बना रहा है या खा रहा है या बता रहा है कि फलों जगह फलों न खाया तो जिंदगी बर्बाद है। भारत से कुछ वीडियो देखने को मिले, जिन्हें देख कर दिमाग का दही होना ही था। अहमदाबाद का वीडियो है, जहां दो मोनाको बिस्किट के बीच में आलू का मसाला भर कर इस पूरे अजूबे को बेसन के घोल में डुबा कर तला गया, लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई है (स्कॉटलैंड में मार्स चॉकलेट बार को मैदे के घोल में डुबा कर तलना जब से देखा है, तब से खाने की किसी भी चीज को किसी भी घोल में तरबतर होकर तेल में पकते हुए देख कर आश्चर्य नहीं होता है)। इस मोनाको बिस्किट भंजिए को फिर टुकड़ों में काट कर जब ठेर सारे मसाले और दूसरी चीजों के साथ परोसा हुआ देखा तो दिमाग चकराधनी हो गया।



कुछ न बन सका..., तमाशा बना दिया !

फ्यूजन फूड के नाम पर कुछ भी पकाया जा रहा है तो इसका मतलब यह नहीं है कि हर डिश में चार-पांच चीज डाली ही जाए। अनगिनत बार ऐसा कुछ सामने आता है और जिस तरह से चीज और बटर का उपयोग होता है इन खानों में, उसे देखकर ही हार्ट-अटैक आने का खतरा बढ़ जाता है। परोसने के एक-एक हिस्से में पाव-पाव भर चीज और मक्खन डाल दिया जाता है। यह सब नया पकाने-दिखाने के नाम पर हो रहा है। इतना ही नहीं भारत से घूमने वाले भी वीडियो बना रहे हैं कि यूरोप की होटल में उन्हें देसी नाश्ता, देसी खाना नहीं मिलता। एक महिला ने तो वीडियो में कह दिया कि अंग्रेजों ने इतने साल राज किया, लेकिन नाश्ता बनाना नहीं सीखा, कम से कम महिलाएं तो सीख ही सकती थीं। ऐसा कहते वक्त इंग्लिश कंट्रीसाइड में नहीं बल्कि जर्मनी में थी।

खबर आई कि चीज से बनने वाली मिठाई में रसमलाई दूसरे नंबर पर है। अब स्वाद का कोई माप तो है नहीं कि आखिर ऐसा क्या है रसमलाई में, जो इस मुकाम तक पहुंची या ऐसा क्या नहीं है जो पहला नंबर आने से चूक गई। रसमलाई के हक में भारत से लोगों ने खूब वीडियो बनाए और इन्हीं में से है लल्लनटॉप का वीडियो, जहां जी भर के अपने-अपने

इलाके की मिठाइयों का बखान करते नजर आए। उत्साह में पोलैंड की मिठाई को पहले नंबर से हटाने की भी बात कह गए।

अपने घर के खाने की तारीफ तो वाजिब है, लेकिन यह कुछ ज्यादाती है कि दूसरे खाने को तवज्जो ही न दी जाए। कहां गए वो लोग, जो घर के खाने को तरजीह देते थे, जो खाना बनाने के पुराने तौर-तरीकों और रेसेपी में वही पुराना वाला स्वाद ढूँढते फिरते थे। एक फिल्म में फूड क्रिटिक जब खाना खाने की शुरुआत करता है तो सबकी धड़कनें बढ़ जाती हैं, लेकिन जैसे ही उसे वो स्वाद मिलता है, जो बचपन की याद दिलाता है तो मामला अलग ही हो जाता है। नए तरीकों से खाना बनाना गलत नहीं है, लेकिन जिस तरह बिना सोचे-समझे कुछ नया की होड़ में पनीर और चीज से मिलावट हो रही है, वो नाकाबिले बर्दाश्त है।

भारतीय खाना वैसे भी दुनिया में स्वाद के दम पर ही तो मुकाम बना चुका है, ऐसे में न तो कुछ नया खोजने की जरूरत है न ही पुराने को भूल जाने की। जरूरत है बस, खाने के साथ छेड़छाड़ के बंद होने की, वरना दुबेजी के चौबेजी और छब्बेजी वाली कहावत याद ही होगी!